सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand

सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड के लिए धरोहर उप-विधि

Heritage Bye-Laws for Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand

विषय – सूची

अध्याय 1 प्रारंभिक		
1.1	संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ	1
1.2	परिभाषाएं	2-3
अध्याय 2 प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि		
2.1	अधिनियम की पृष्ठभूमि	4
2.2	धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध	4
2.3	आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां	4-5
अध्याय 3 संरक्षित संस्मारक – सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड का स्थान और अवस्थिति		
3.1	संस्मारक का स्थान और अवस्थिति	6
3.2	संस्मारक की संरक्षित सीमा	7
	3.2.1 एएसआई रिकॉर्ड के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/योजना	7
3.3	संस्मारक का इतिहास	7
3.4	संस्मारक का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएँ, तत्व, सामग्री, आदि)	7
3.5	वर्तमान स्थिति	8
	3.5.1 संस्मारक की स्थिति-स्थिति का आकलन	8
	3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या	8
अध्याय 4 स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में मौजूदा ज़ोनिंग, यदि कोई हो		
4.1	मौजूदा ज़ोनिंग	9
4.2	स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश	9
अध्याय 5 प्रथम अनुसूची एवं सर्वेक्षण योजना के अनुसार सूचना		
5.1	संस्मारक की सर्वेक्षण योजना	10
5.2	सर्वेक्षित आंकड़ो का विश्लेषण	10
	5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण	10
	5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण	10

	5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण	10-11
	5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि	11
	5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊँचाई	11
	5.2.6 राज्य संरक्षित संस्मारक और सूचीबद्ध धरोहर भवन यदि उपलब्ध हों	11
	5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं	11
	5.2.8 संस्मारक तक पहुंच	11
	5.2.9 अवसरंचनात्मक सेवाएं	11
	5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित ज़ोनिंग	11
	अध्याय 6 **संस्मारक की वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व**	
6.1	वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व	12
6.2	संस्मारक की संवेदनशीलता	12
6.3	संरक्षित संस्मारक या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता	12-14
6.4	पहचान किया जाने वाला भूमि उपयोग	13
6.5	संरक्षित संस्मारक के अलावा अन्य पुरातात्विक धरोहर	13
6.6	सांस्कृतिक परिदृश्य	13
6.7	महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य	13
6.8	खुली जगह और निर्माण का उपयोग	13
6.9	पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ	13
6.10	संस्मारक और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज	13
6.11	पारंपरिक वास्तुकला	14
6.12	स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा यथा उपलब्ध विकास योजना	14
6.13	अनुमेय भवन संबंधी मापदंड	14
	6.13.1 मरम्मत और नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में)	14
	6.13.2 पुनर्निर्माण	14-15
	6.13.3 नया निर्माण	15-17
6.14	आगंतुक सुविधाएं और प्रसाधन	17
	अध्याय 7 **स्थल विशिष्ट सिफारिशें**	
7.1	स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें	18
7.2	अन्य सिफ़ारिशें	18

CONTENTS		
CHAPTER 1 PRELIMINARY		
1.1	Short title, Extent and Commencements	19
1.2	Definitions	20-21
CHAPTER 2 Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended		
2.1	Background of the Act	22
2.2	Provision of the Act related to Heritage Bye-Laws	22
2.3	Rights and Responsibilities of the Applicant	22-23
CHAPTER 3 Location and Setting of the Protected Monument- Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand		
3.1	Location and Setting of the Monument	24
3.2	Protected boundary of the Monument	25
	3.2.1 Notification Map/ Plan as per ASI records	25
3.3	History of the Monument	25
3.4	Description of Monument (architectural features, elements, materials etc.)	25
3.5	Current Status	26
	3.5.1 Condition of the Monument - condition assessment	26
	3.5.2 Daily footfalls and occasional gathering numbers	26
CHAPTER 4 Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans		
4.1	Existing Zoning	27
4.2	Existing Guidelines of the local bodies	27
CHAPTER 5 Information as per First Schedule and Survey Plan		
5.1	Survey Plan of Monument	28
5.2	Analysis of surveyed data	28
	5.2.1 Prohibited Area and Regulated Area details	28
	5.2.2 Description of built-up area	28
	5.2.3 Description of green/open spaces	28-29
	5.2.4 Area covered under circulation- roads, footpaths etc.	29
	5.2.5 Existing Heights of buildings	29
	5.2.6 State protected monuments and listed heritage building	29
	5.2.7 Public amenities	29
	5.2.8 Access to the Monument	29

	5.2.9 Infrastructure services	29
	5.2.10 Proposed zoning of the area as per Local Bodies	29
CHAPTER 6 Architectural, Historical and Archaeological Value of the Monument		
6.1	Architectural, Historical and Archaeological Value	30
6.2	Sensitivity of the Monument	30
6.3	Visibility from the Protected Monument or area and visibility from Regulated Area	30-31
6.4	Land-use to be identified	31
6.5	Archaeological heritage remains other than Protected Monument	31
6.6	Cultural landscapes	31
6.7	Significant natural landscapes	31
6.8	Usage of open space and constructions	31
6.9	Traditional, historical and cultural activities	31
6.10	Skyline as visible from the monument and from Regulated Areas	31
6.11	Traditional architecture	32
6.12	Developmental plan, as available, by the local authorities	32
6.13	Permissible Building related parameters	32
	6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated Area)	32
	6.13.2 Reconstruction	32
	6.13.3 New Construction	33-34
6.14	Visitor facilities and amenities	35
CHAPTER 7 Site Specific Recommendations		
7.1	Site Specific Recommendations	36
7.2	Other Recommendations	36

Annexure		
अनुलग्नक-I Annexure-I	सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड की सर्वेक्षण योजना Survey Plan of the Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand	37
अनुलग्नक-II Annexure-II	संस्मारक की अधिसूचना Notification of the Monument	38-40
अनुलग्नक-III Annexure–III	संस्मारक और उसके आस-पास के क्षेत्रों के चित्र Images of the Monument and its surrounding areas	41-47

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधि विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम (22) के साथ पठित प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, संरक्षित संस्मारक **"सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड"** के लिए निम्नलिखित धरोहर उप-विधि, स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग, डीआईटी यूनिवर्सिटी, देहरादून के परामर्श से सक्षम प्राधिकारी द्वारा तैयार किया गया है, को राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें और कार्य प्रणाली), नियम, 2011 के नियम 18 के उप नियम 2 द्वारा यथा अपेक्षित जनता से आपत्ति या सुझाव आमंत्रित करने के लिए एतद्वारा 06.09.2024 को प्रकाशित किया गया था।

यथा विनिर्दिष्ट दिनांक से पहले प्राप्त आपत्ति/सुझावों पर सक्षम प्राधिकारी के परामर्श से राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण द्वारा विधिवत विचार किया गया है।

इसलिए, अब प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ की उप-धारा (5) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण, निम्नलिखित उप-विधि बनाता है, नामत:

"सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड" के लिए धरोहर उप-विधि

अध्याय 1
प्रारंभिक

1.1 संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ:-

(i) इन उप-विधियों को संरक्षित संस्मारक **"सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड"** के लिए राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण धरोहर उप-विधि, 2025 कहा जाएगा।

(ii) ये संस्मारक के सम्पूर्ण प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र तक लागू होंगी।

(iii)इन उप-विधियों के प्रावधान किसी भी अन्य उप-विधि में निहित असंगतता के बावजूद प्रभावी होंगे, चाहे इन उप-विधियों के प्रारंभ होने से पहले या बाद में बनाए गए हों, या किसी उप-विधि के आधार पर प्रभावी होने वाले किसी भी दस्तावेज़ में हों। इन उप-विधियों को किसी अन्य उप-विधि के अनुरूप बनाने के लिए इनमें संशोधन करना अनिवार्य नहीं होगा।

(iv)ये अधिकारिक राजपत्र में उनके प्रकाशन की तिथि से प्रवृत्त होंगी।

1.2 परिभाषाएं:-

1. इन उप-विधियों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों के तहत दिए अनुसार परिभाषाएं सुविधा की दृष्टि से यहां पुन: लिखी गई हैं:-

(क) "प्राचीन संस्मारक" से कोई संरचना, रचना या संस्मारक, या कोई स्तूप या स्थान या दफ़नगाह या कोई गुफा, शैल-मूर्ति, शिला-लेख या एकाश्मक जो ऐतिहासिक, पुरातत्वीय या कलात्मक रुचि का है और जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, अभिप्रेत है, और इसके अंतर्गत हैं -

(i) किसी प्राचीन संस्मारक के अवशेष,

(ii) किसी प्राचीन संस्मारक का स्थल,

(iii) किसी प्राचीन संस्मारक के स्थल से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो ऐसे संस्मारक को बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

(iv) किसी प्राचीन संस्मारक तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

(ख) "पुरातत्वीय स्थल और अवशेष" से कोई ऐसा क्षेत्र अभिप्रेत है, जिसमें ऐतिहासिक या पुरातत्वीय महत्व के ऐसे भग्नावशेष या अवशेष हैं या जिनके होने का युक्तियुक्त रूप से विश्वास किया जाता है, जो कम से कम एक सौ वर्षों से विद्यमान है, और इनके अंतर्गत हैं-

(i) उस क्षेत्र से लगी हुई भूमि का ऐसा भाग जो उसे बाड़ से घेरने या आच्छादित करने या अन्यथा परिरक्षित करने के लिए अपेक्षित हो, तथा

(ii) उस क्षेत्र तक पहुंचने और उसके सुविधाजनक निरीक्षण के साधन;

(ग) "अधिनियम" से आशय प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, है;

(घ) "पुरातत्व अधिकारी" से भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का कोई ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद् से निम्नतर पद (श्रेणी) का नहीं है;

(ड.) ''प्राधिकरण'' से अधिनियम की धारा 20च के अधीन गठित राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(च) "सक्षम प्राधिकारी" से केंद्र सरकार या राज्य सरकार के पुरातत्व निदेशक या पुरातत्व आयुक्त की श्रेणी से नीचे न हो या समतुल्य श्रेणी का ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के अधीन कृत्यों का पालन करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, सक्षम प्राधिकारी के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया हो:

बशर्ते कि केंद्र सरकार सरकारी राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, धारा 20ग, 20घ और 20ङ के प्रयोजन के लिए भिन्न भिन्न सक्षम प्राधिकारी विनिर्दिष्ट कर सकेगी;

(छ) ''निर्माण'' से किसी संरचना या भवन का कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसके अंतर्गत उसमें ऊर्ध्वाकार या क्षैतिजीय कोई परिवर्धन या विस्तारण भी है, किन्तु इसके अंतर्गत किसी विद्यमान संरचना या भवन का कोई पुन:निर्माण, मरम्मत और नवीकरण या नालियों और जलनिकास सुविधाओं तथा सार्वजनिक शौचालयों, मूत्रालयों और इसी प्रकार की सुविधाओं का निर्माण, अनुरक्षण और सफाई या जनता के लिए जलापूर्ति की व्यवस्था करने के लिए आशयित सुविधाओं का निर्माण और अनुरक्षण या जनता के लिए विद्युत की आपूर्ति और वितरण के लिए निर्माण या अनुरक्षण, विस्तारण, प्रबंध या जनता के लिये इसी प्रकार की सुविधाओं के लिए व्यवस्था शामिल नहीं हैं;

(ज) "सरकार" से आशय भारत सरकार से है;

(झ) अपने व्याकरणिक रूपों और सजातीय पदों सहित "अनुरक्षण" के अंतर्गत हैं किसी संरक्षित संस्मारक को बाड़ से घेरना, उसे आच्छादित करना, उसकी मरम्मत करना, उसका पुनरूद्धार करना और उसकी सफाई करना, और कोई ऐसा कार्य करना जो किसी संरक्षित संस्मारक के परिरक्षण या उस तक सुविधाजनक पहुंच को सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए आवश्यक है;

(ञ) "स्वामी" के अंतर्गत हैं-

(i) संयुक्त स्वामी जिसमें अपनी ओर से तथा अन्य संयुक्त स्वामियों की ओर से प्रबंध करने की शक्तियॉ निहित हैं और किसी ऐसे स्वामी के हक-उत्तराधिकारी, तथा

(ii) प्रबंध करने की शक्तियों का प्रयोग करने वाला कोई प्रबंधक या न्यासी और ऐसे किसी प्रबंधक या न्यासी का पद में उत्तराधिकारी;

(ट) "विहित" से इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियम अभिप्रेत है:

(ठ) "प्रतिषिद्ध क्षेत्र" से धारा 20क के अधीन प्रतिषिद्ध क्षेत्र के रूप में विनिर्दिष्ट क्षेत्र या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(ड) "संरक्षित क्षेत्र" से कोई ऐसा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ढ) "संरक्षित संस्मारक" से कोई ऐसा प्राचीन संस्मारक अभिप्रेत है, जिसे इस अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन राष्ट्रीय महत्व का होना घोषित किया गया है;

(ण) "विनियमित क्षेत्र" से धारा 20ख के अधीन विनिर्दिष्ट या घोषित किया गया कोई क्षेत्र अभिप्रेत है;

(त) "पुन: निर्माण" से किसी संरचना या भवन का उसकी पूर्व विद्यमान संरचना में ऐसा कोई परिनिर्माण अभिप्रेत है, जिसकी क्षैतिजीय और ऊर्ध्वाकार सीमाएं समान हैं;

(थ) "मरम्मत और पुनरुद्धार" से किसी पूर्व विद्यमान संरचना या भवन के परिवर्तन अभिप्रेत हैं, किन्तु इसके अंतर्गत निर्माण या पुन: निर्माण नहीं होंगे।

2. इसमें प्रयुक्त और परिभाषित नहीं किए गए शब्दों और अभिव्यक्तियों का आशय वही अर्थ होगा जैसा अधिनियम अथवा इसके तहत बनाए गए नियमों में समनुदेशित किया गया है।

अध्याय 2

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (एएमएएसआर) अधिनियम,1958, यथा संशोधित, की पृष्ठभूमि

2.1 अधिनियम की पृष्ठभूमि:

धरोहर उप-विधियों का उद्देश्य केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित संस्मारकों की सभी दिशाओं में 300 मीटर के अंदर भौतिक, सामाजिक और आर्थिक दखल के बारे में मार्गदर्शन देना है। 300 मीटर के क्षेत्र को दो भागों में बॉटा गया है (i) **प्रतिषिद्ध क्षेत्र,** यह क्षेत्र संरक्षित क्षेत्र अथवा संरक्षित संस्मारक की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 100 मीटर की दूरी तक फैला है और (ii) **विनियमित क्षेत्र,** यह क्षेत्र प्रतिषिद्ध क्षेत्र की सीमा से शुरू होकर सभी दिशाओं में 200 मीटर की दूरी तक फैला है।

अधिनियम के उपबंधों के अनुसार, कोई भी व्यक्ति संरक्षित क्षेत्र और प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी प्रकार का निर्माण अथवा खनन का कार्य नहीं कर सकता जबकि ऐसा कोई भवन अथवा संरचना जो प्रतिषिद्ध क्षेत्र में 16 जून, 1992 से पूर्व मौजूद था अथवा जिसका निर्माण बाद में महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की अनुमति से हुआ था, विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना का निर्माण, पुन: निर्माण, मरम्मत अथवा पुनरुद्धार की अनुमति सक्षम प्राधिकारी से लेना अनिवार्य है।

2.2 धरोहर उप-विधियों से संबंधित अधिनियम के उपबंध:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ङ और प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (धरोहर उप-विधियों का विनिर्माण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम 2011 के नियम 22 में संरक्षित संस्मारकों के लिए उप-विधि बनाना विनिर्दिष्ट है। नियम में धरोहर उप-विधि बनाने के लिए मापदंडों का प्रावधान है। राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष और सदस्यों की सेवा शर्तें तथा कार्य निष्पादन) नियम, 2011, नियम 18 में प्राधिकरण द्वारा धरोहर उप-विधियों के अनुमोदन की प्रक्रिया विनिर्दिष्ट है।

2.3 आवेदक के अधिकार और जिम्मेदारियां:

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग में प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मरम्मत और पुनरुद्धार अथवा विनियमित क्षेत्र में निर्माण अथवा पुनर्निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण के लिए नीचे दिए गए विवरण के अनुसार आवेदन का ब्यौरा विनिर्दिष्ट है:

(क) कोई व्यक्ति जो किसी ऐसे भवन अथवा संरचना का स्वामी है जो 16 जून, 1992 से पहले प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मौजूद था अथवा जिसका निर्माण इसके उपरांत महानिदेशक के अनुमोदन से हुआ था तथा जो ऐसे भवन अथवा संरचना का किसी प्रकार की मरम्मत अथवा नवीकरण का काम कराना चाहता है तो वह ऐसी मरम्मत और नवीकरण, जैसा भी स्थिति हो, को कराने के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ख) कोई व्यक्ति जो किसी विनियमित क्षेत्र में किसी भवन अथवा संरचना अथवा भूमि का स्वामी है और वह ऐसी भूमि पर ऐसे भवन अथवा संरचना अथवा का कोई निर्माण अथवा पुन: निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, करना चाहता है तो वह निर्माण अथवा पुन: निर्माण अथवा मरम्मत अथवा नवीकरण जैसी भी स्थिति हो, के लिए सक्षम प्राधिकारी को आवेदन कर सकता है।

(ग) सभी संबंधित सूचना प्रस्तुत करने तथा राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण (प्राधिकरण के अध्यक्ष तथा सदस्यों की सेवा की शर्तें और कार्य संचालन) नियम, 2011 के अनुपालन की जिम्मेदारी आवेदक की होगी।

अध्याय 3

संरक्षित संस्मारक – सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड का स्थान और अवस्थिति

3.1 संस्मारक का स्थान और अवस्थिति:

संरक्षित संस्मारक उत्तराखंड के चमोली जिले के एक गांव कर्णप्रयाग से 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव पिंडर नदी की एक सहायक नदी अटा गाड़ के तट पर स्थित है।

भौगोलिक निर्देशांक हैं: **अक्षांश:** 30°09'22.4"N, **देशांतर:** 79°13'35.4"E.

संरक्षित संस्मारक राष्ट्रीय राजमार्ग-109 (एनएच-109) के किनारे स्थित है।

निकटतम रेलवे स्टेशन ऋषिकेश रेलवे स्टेशन है जो 202 किलोमीटर दूर है और निकटतम हवाई अड्डा जॉली ग्रांट हवाई अड्डा, देहरादून है जो संरक्षित संस्मारक से 210 किलोमीटर दूर है।

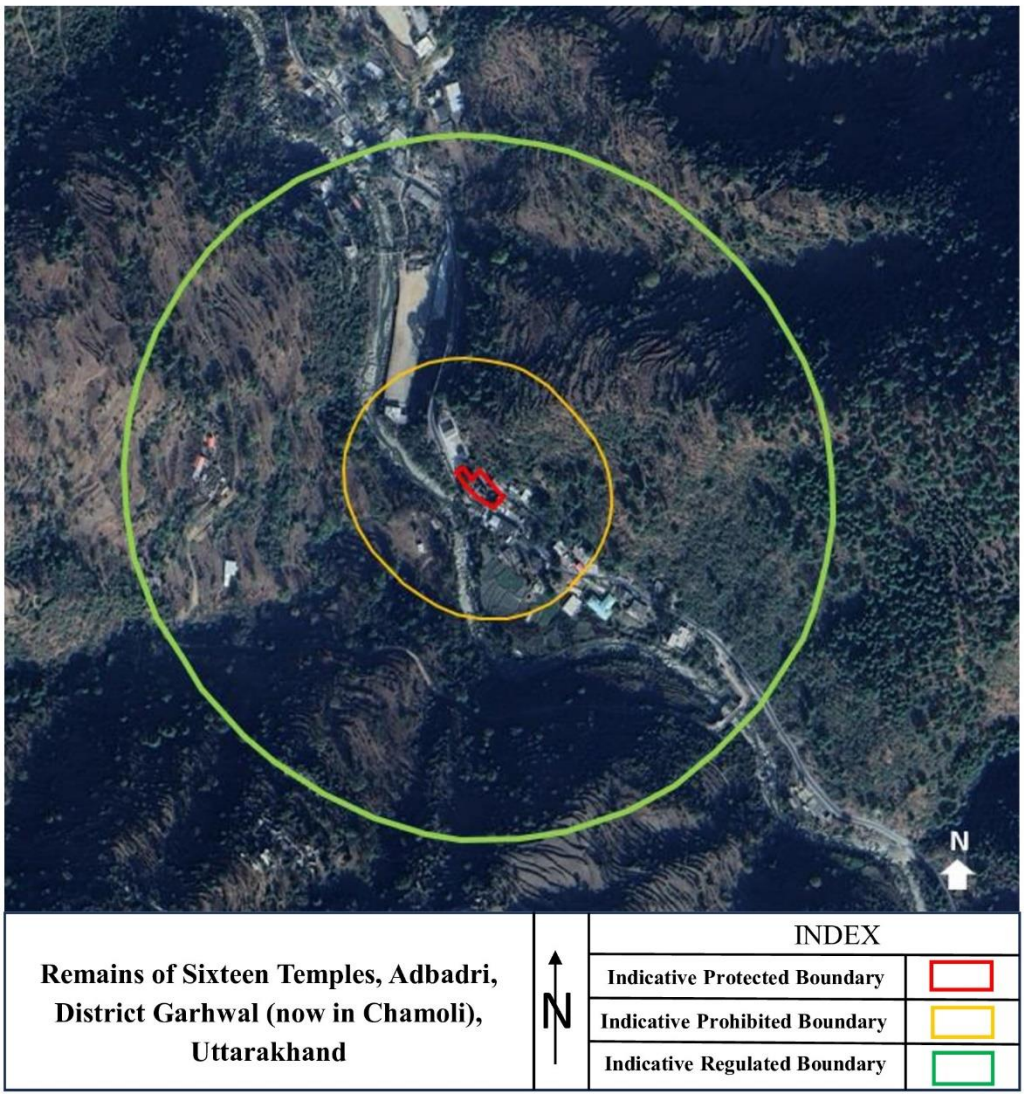

चित्र 1: संरक्षित संस्मारक - सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड का स्थान दर्शाता गूगल मानचित्र

3.2 संस्मारक की संरक्षित सीमा:

संरक्षित संस्मारक – सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड की संरक्षित सीमा **अनुलग्नक-I** में देखी जा सकती है।

3.2.1 एएसआई रिकॉर्ड के अनुसार अधिसूचना मानचित्र/योजना:

सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड की अधिसूचना **अनुलग्नक-II** में देखी जा सकती है।

3.3 संस्मारक का इतिहास:

इन मंदिरों का निर्माण 8वीं और 12वीं शताब्दी के बीच हुआ था। केंद्रीय मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है जबकि समूह के अन्य मंदिरों[1] में श्री लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, अन्नपूर्णा, सूर्य, सत्यनारायण, गणेश, शिव, गरुड़, दुर्गा और जानकी जैसे देवताओं को समर्पित मंदिर हैं।

3.4 संस्मारक का विवरण (वास्तुशिल्प विशेषताएँ, तत्व, सामग्री, आदि):

परिसर के भीतर मुख्य मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है जिन्हें आदिबद्री के रूप में भी जाना जाता है। मंदिर जगती नामक एक ऊंचे टीले पर बनाया गया है जिसमें मुख मंडप तक सीढ़ियों के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। मंदिर की रूपरेखा में तीन मुख्य खंड शामिल हैं: मुख मंडप, सभा मंडप और गर्भगृह, जिसमें मूर्ति है। मुख मंडप और सभा मंडप दोनों ही कम ऊंचाई वाली ढलवां छतों से सुशोभित हैं। गर्भगृह के ऊपर निर्मित मुख्य मंदिर का शिखर घुमावदार है और जटिल नक्काशी और मूर्तिकला के रूपांकनों से सुसज्जित है जो वास्तुकला की विशिष्ट नागर शैली को दर्शाता है।

इसकी तुलना में, अन्य मंदिर आकार और रूपरेखा में छोटे हैं। स्तंभों और द्वारों पर अलग-अलग अलंकरण और रूपांकनों के साथ सभी मंदिरों का निर्माण स्थानीय रूप से प्राप्त पत्थरों से किया गया है। अन्य तेरह मंदिर निम्नलिखित हैं:

1. गणेश मंदिर
2. राम-लक्ष्मण मंदिर
3. काली माता मंदिर
4. जानकी मंदिर
5. शिव मंदिर
6. गौरीशंकर मंदिर
7. हनुमान मंदिर
8. गरुड़ मंदिर
9. अन्नपूर्णा मंदिर
10. लक्ष्मीनारायण मंदिर
11. कुबेर मंदिर
12. सूर्य मंदिर
13. सत्यनारायण मंदिर

[1] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (देहरादून सर्कल)

3.5 वर्तमान स्थिति:

3.5.1 संस्मारक की स्थिति - स्थिति आकलन:

संरक्षित संस्मारक और उसके संरक्षित क्षेत्र का रखरखाव और संरक्षण भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) का विशेष अधिकार क्षेत्र है। संरक्षित संस्मारक की वर्तमान स्थिति को दर्शाने वाले चित्र **अनुलग्नक-III** में संलग्न हैं।

3.5.2 प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या और कभी-कभी एकत्रित होने वाले लोगों की संख्या:

यहां प्रतिदिन लगभग 150 पर्यटक आते हैं, लेकिन त्योहारों के दौरान यहां प्रतिदिन[2] 500 से अधिक पर्यटक आते हैं।

[2] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (देहरादून सर्कल)

अध्याय 4

स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाओं में मौजूदा ज़ोनिंग, यदि कोई हो

4.1 मौजूदा ज़ोनिंग:

स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा अभी तक कोई ज़ोनिंग विनियम या मास्टर प्लान तैयार नहीं किया गया है। संरक्षित संस्मारक **आदिबद्री ग्राम पंचायत** के क्षेत्र में स्थित है।

4.2 स्थानीय निकायों के मौजूदा दिशानिर्देश:

स्थानीय प्राधिकरियों द्वारा कोई भूमि-उपयोग योजना, मास्टर प्लान, ज़ोनिंग विनियम तैयार नहीं किए गए हैं, इसलिए भूमि-उपयोग योजना, मास्टर प्लान, ज़ोनिंग विनियम आदि तैयार करते समय इन धरोहर उप-विधियों में उल्लिखित प्रावधानों पर विचार करना और उन्हें शामिल करना अनिवार्य है।

आवास विभाग, उत्तराखंड सरकार द्वारा तैयार किए गए **"भवन निर्माण एवं विकास अधिनियम, उत्तराखंड, 2011"** में निर्दिष्ट भूकंप, भूस्खलन, आग आदि के लिए अन्य सभी विकास नियंत्रण मानदंड, भवन विनियम और संरचनात्मक सुरक्षा संबंधी प्रावधान, जब भी संशोधित किए जाएंगे, लागू होंगे। हालांकि, इन धरोहर उप-विधियों के अध्याय 6, भाग 6.13 में निर्दिष्ट ऊंचाई और अन्य मापदंड संरक्षित संस्मारक के विनियमित क्षेत्र में लागू होंगे।

अध्याय 5

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अभिलेख (रिकार्ड) में परिभाषित सीमाओं के आधार पर प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों की प्रथम अनुसूची नियम 21 (1)/सर्वेक्षण योजना के अनुसार सूचना

5.1 संरक्षित संस्मारक की सर्वेक्षण योजना:

सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड की सर्वेक्षण योजना **अनुलग्नक-I** में देखी जा सकती है।

5.2 सर्वेक्षित आंकड़ों का विश्लेषण:

5.2.1 प्रतिषिद्ध क्षेत्र और विनियमित क्षेत्र का विवरण:

संरक्षित क्षेत्र लगभग 0.16 एकड़ है।

प्रतिषिद्ध क्षेत्र लगभग 10.75 एकड़ है।

विनियमित क्षेत्र लगभग 78.46 एकड़ है।

5.2.2 निर्मित क्षेत्र का विवरण:

उत्तर: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में स्थानीय विशेषता की कुछ आवासीय इमारतें मौजूद हैं। विनियमित क्षेत्र में आवासीय और इक्का-दुक्का इमारतों का एक समूह मौजूद है।

पूर्व: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में भारतीय स्टेट बैंक की शाखा, डाकघर और कुछ आवासीय इमारतें मौजूद हैं। विनियमित क्षेत्र में कुछ आवासीय और वाणिज्यिक इमारतें, गढ़वाल मंडल विकास निगम (जीएमवीएन) का गेस्ट हाउस, एक पुलिस स्टेशन और आदिबद्री तहसील कार्यालय मौजूद हैं।

दक्षिण: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में कुछ आवासीय और कुछ इक्का-दुक्का इमारतें मौजूद हैं। विनियमित क्षेत्र में कोई निर्माण मौजूद नहीं है।

पश्चिम: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में कोई निर्माण मौजूद नहीं है। विनियमित क्षेत्र में आवासीय इमारतों का एक समूह है।

5.2.3 हरित/खुले स्थानों का विवरण:

उत्तर: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में ढलानदार भूभाग पर मध्यम रूप से घने वन आवरण वाला एक खुला क्षेत्र है। विनियमित क्षेत्र में वनस्पति वाला खुला क्षेत्र और एक पहाड़ी श्रृंखला मौजूद है।

पूर्व: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में निर्मित क्षेत्र के भीतर कुछ खाली भूखंड मौजूद हैं। विनियमित क्षेत्र में पहाड़ी श्रृंखला के साथ घने वन वाले खुले क्षेत्र हैं।

दक्षिण: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में अता गाद नदी के किनारे ढलानदार भूभाग पर मध्यम रूप से घने वन आवरण वाला एक खुला क्षेत्र है। विनियमित क्षेत्र में नदी और पहाड़ियों की श्रृंखला के साथ एक खुला क्षेत्र है।

पश्चिम: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में वनस्पति वाला खुला क्षेत्र और खाली भूमि है। विनियमित क्षेत्र में पहाड़ी श्रृंखला पर वनस्पति वाला खुला क्षेत्र और खाली भूमि है।

5.2.4 परिसंचरण के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र - सड़कें, फुटपाथ आदि:

संरक्षित संस्मारक तक सीधे राष्ट्रीय राजमार्ग-109 द्वारा पहुंचा जा सकता है जो आसपास के गांवों और शहरों को जोड़ता है।

5.2.5 भवनों की मौजूदा ऊंचाई:

उत्तर: संरचनाओं/भवनों की ऊंचाई जी से जी+2 संरचनाओं तक है।

पूर्व: संरचनाओं/भवनों की ऊंचाई जी से जी+2 संरचनाओं तक है।

दक्षिण: संरचनाओं/भवनों की ऊंचाई जी से जी+1 संरचनाओं तक है।

पश्चिम: संरचनाओं/भवनों की ऊंचाई जी से जी+1 संरचनाओं तक है।

5.2.6 प्रतिषिद्ध/विनियमित क्षेत्र के भीतर स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा राज्य संरक्षित संस्मारक और सूचीबद्ध धरोहर भवन, यदि उपलब्ध हों:

कोई भी राज्य संरक्षित संस्मारक या स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा सूचीबद्ध विरासत भवन प्रतिषिद्ध या विनियमित क्षेत्र में नहीं है।

5.2.7 सार्वजनिक सुविधाएं:

सार्वजनिक सुविधाएं जैसे पेयजल सुविधाएं, सार्वजनिक शौचालय, साइनेज और पार्किंग मौजूद हैं।

5.2.8 संस्मारक तक पहुंच:

संरक्षित संस्मारक मुख्य सड़क के किनारे स्थित है। यह गांव एनएच-109 द्वारा आस-पास के गांवों और कस्बों से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।

5.2.9 अवसंरचनात्मक सेवाएं (जल आपूर्ति, वर्षा जल निकासी, सीवेज, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पार्किंग आदि):

यहां जलापूर्ति, वर्षा जल निकासी, सीवेज और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी बुनियादी सुविधाएं मौजूद हैं।

5.2.10 स्थानीय निकायों के दिशा-निर्देशों के अनुसार क्षेत्र का प्रस्तावित ज़ोनिंग:

किसी भी मौजूदा स्थानीय प्राधिकारी द्वारा कोई विकास योजना तैयार नहीं की गई है और न ही उसे सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध कराया गया है। इसलिए वर्तमान में कोई ज़ोनिंग प्रस्तावित नहीं है।

अध्याय 6

संस्मारक का वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व

6.1 संस्मारक का वास्तुकला, ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व:

वास्तुकला महत्व:

भगवान विष्णु को समर्पित मुख्य मंदिर *जगती* नामक एक ऊंचे टीले पर स्थित है, जिसे आदिबद्री के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर की रूपरेखा में *मुख-मंडप,* सभा-मंडप और गर्भगृह शामिल हैं। *मुख-मंडप* और *सभा-मंडप* दोनों में कम ऊंचाई वाली छतें हैं और *गर्भगृह* के ऊपर निर्मित मुख्य मंदिर का *शिखर* घुमावदार है तथा जटिल नक्काशी और मूर्तिकला रूपांकनों से सुसज्जित है, जो वास्तुकला की नागर शैली को दर्शाता है। अन्य मंदिर हालांकि छोटे हैं तथा स्थानीय रूप से प्राप्त पत्थरों से निर्मित हैं, जिनमें से प्रत्येक में स्तंभों और द्वारों पर अद्वितीय अलंकरण और रूपांकन हैं।

ऐतिहासिक महत्व:

मंदिरों का निर्माण 8वीं और 12वीं शताब्दी ई. के बीच किया गया था, जो इस अवधि के ऐतिहासिक संदर्भ की झलक दर्शाते हैं। केंद्रीय मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है, जबकि समूह के अन्य मंदिरों में श्री लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, अन्नपूर्णा, सूर्य, सत्यनारायण, गणेश, शिव, गरुड़, दुर्गा और जानकी जैसे देवताओं को समर्पित है। यह विविधता उस युग की समृद्ध आध्यात्मिक परंपराओं को दर्शाती है।

पुरातात्विक मूल्य:

इन मंदिरों में प्रयुक्त निर्माण सामग्री और तकनीकें उस काल की शिल्पकला और स्थापत्य कला के बारे में महत्वपूर्ण पुरातात्विक जानकारी उपलब्ध कराती हैं।

6.2 संस्मारक की संवेदनशीलता (विकासात्मक दबाव, शहरीकरण, जनसंख्या दबाव, आदि):

हालाँकि यह क्षेत्र घनी आबादी वाला नहीं है, लेकिन बस्तियों के विस्तार के कारण धीरे-धीरे अतिक्रमण से संरक्षित संस्मारक को खतरा है। वर्तमान में, चुनौतीपूर्ण भूभाग के कारण संरक्षित संस्मारक के उत्तरी और दक्षिणी दोनों किनारों पर निर्माण गतिविधियाँ मौजूद नहीं हैं। हालाँकि, चूँकि यह मुख्य सड़क पर स्थित है, इसलिए सड़क के किनारे विकास का दबाव एक महत्वपूर्ण जोखिम पैदा करता है। अनियोजित बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ और व्यावसायिक विकास आसपास के क्षेत्र पर अतिक्रमण कर सकते हैं, जिससे संरक्षित संस्मारक के दृश्य और आध्यात्मिक माहौल में बाधा आ सकती है।

6.3 संरक्षित संस्मारक या क्षेत्र से दृश्यता और विनियमित क्षेत्र से दृश्यता:

संरक्षित संस्मारक से पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी तरफ मध्यम से घने वन क्षेत्र वाला पहाड़ी इलाका दिखाई देता है। संरक्षित संस्मारक के उत्तरी हिस्से से चारदीवारी के साथ ऊंचे स्तर पर बने घर दिखाई देते हैं। मुख्य पहुंच मार्ग और पिंडर नदी की सहायक नदी अता गाद संरक्षित संस्मारक के दक्षिणी हिस्से से दिखाई देती है।

पहाड़ी इलाके में स्थित होने के कारण संरक्षित संस्मारक प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों के भीतर दक्षिणी हिस्से से दिखाई देता है। हालांकि, मुख्य सड़क के किनारे इलाके और निर्माण के कारण अन्य तीन तरफ से दृश्यता सीमित है।

6.4 पहचान किया जाने वाला भूमि उपयोग:

प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मुख्य रूप से वन क्षेत्र के साथ ढलान वाली खाली भूमि शामिल है। जबकि विनियमित क्षेत्र में आवासीय, संस्थागत और इक्का-दुक्का इमारतें मौजूद है।

6.5 संरक्षित संस्मारक के अलावा अन्य पुरातात्विक धरोहर:

संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों में अभी तक कोई पुरातात्विक विरासत अवशेष नहीं पाए गए हैं।

6.6 सांस्कृतिक परिदृश्य:

अता गाद नदी के किनारे पहाड़ी इलाके में बसा यह गांव सांस्कृतिक परिदृश्य का अभिन्न अंग है। अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों और पंच बद्री के संबंध में इसका स्थान धार्मिक महत्व के स्थान के रूप में इसके महत्व को बढ़ाता है।

6.7 महत्वपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य जो सांस्कृतिक परिदृश्य का हिस्सा बनते हैं और संस्मारक को पर्यावरण प्रदूषण से बचाने में भी मदद करते हैं:

नदी के किनारे संरक्षित संस्मारक की मौजूदगी और क्षेत्र की स्थलाकृति ने सांस्कृतिक परिदृश्य को बहुत समृद्ध किया है। मंदिर, नदी के किनारे एक ऊंचे स्थान पर बनाया गया है। पहाड़ी इलाके और नदी से निकटता के साथ प्राकृतिक स्थलाकृति, संरक्षित संस्मारक को शहरीकरण से अलग रखने में योगदान देती है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण का जोखिम कम होता है।

6.8 खुली जगह और निर्माण का उपयोग:

खुले स्थानों का उपयोग मुख्यतः खाली भूखंडों और वन क्षेत्र के लिए किया जाता है जबकि निर्माण का उपयोग आवासीय और वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

6.9 पारंपरिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ:

पूजा, आरती और यात्रा जैसे पारंपरिक अनुष्ठान आदिबद्री में दैनिक जीवन का अभिन्न अंग हैं जो पीढ़ियों से चले आ रहे सदियों पुराने रीति-रिवाजों और प्रथाओं को संरक्षित करते हैं। दैनिक अनुष्ठानों के अलावा, मंदिर परिसर में महा शिवरात्रि, आदिबद्री नौथ कौथिग मेला, बसंत पंचमी और अक्षय तृतीया जैसे वार्षिक उत्सव और धार्मिक गतिविधियाँ भी मनाई जाती हैं।

6.10 संस्मारक और विनियमित क्षेत्रों से दिखाई देने वाला क्षितिज:

संरक्षित संस्मारक के दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वी हिस्से से पहाड़ और आस-पास के गांवों का क्षितिज दिखाई देता है। उत्तरी हिस्से में पहाड़ी इलाका संरक्षित संस्मारक से दृश्य को बाधित करता है।

विनियमित क्षेत्र से, संरक्षित संस्मारक, भूभाग और मुख्य सड़क के किनारे निर्माण दिखाई देता है।

6.11 पारंपरिक वास्तुकला:

कुछ पारंपरिक घरों में काठ-कुनी से प्रभावित स्थानीय निर्माण देखा जा सकता है। स्लेट की छत वाले मिट्टी और लकड़ी के घरों के उदाहरण भी मौजूद हैं।

6.12 स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा उपलब्ध विकास योजना:

किसी भी मौजूदा स्थानीय प्राधिकारी द्वारा कोई विकास योजना तैयार नहीं की गई है या सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध नहीं कराई गई है।

6.13 अनुमेय भवन संबंधी मापदंड:

6.13.1 मरम्मत और नवीनीकरण (प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्र में):

आंतरिक परिवर्तन और अनुकूली पुनः उपयोग की सामान्य रूप से अनुमति दी जा सकती है। हालाँकि, बाहरी परिवर्तन सक्षम प्राधिकारी द्वारा विस्तृत जाँच के अधीन होंगे। ऐसे परिवर्तन जिनमें रेट्रोफिटिंग/नवीनीकरण शामिल है, की अनुमति तब दी जा सकती है जब इमारत संरचनात्मक रूप से कमज़ोर या असुरक्षित हो या जब उस पर किसी प्राकृतिक आपदा का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हो और नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक हो। मूल इमारत शब्दावली और लेआउट के साथ-साथ निर्मित-खुले संबंधों का पालन किया जाना चाहिए। सक्षम प्राधिकारी से पूर्व अनुमति के अधीन इमारतों की सामान्य मरम्मत और रखरखाव की अनुमति होगी।

भवन/संरचनाओं में मरम्मत और नवीनीकरण संरक्षित संस्मारक और उसके आस-पास के क्षेत्रों की धरोहर विशेषताओं के अनुरूप और उससे मेल खाता होना चाहिए। एल्युमिनियम कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), लैमिनेट्स, टाइलिंग या ग्लेज़िंग जैसी नई क्लैडिंग सामग्री की अनुमति नहीं दी जाएगी। मरम्मत और नवीनीकरण कार्यों को करने में स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

6.13.2 पुनर्निर्माण:

पुनर्निर्माण को एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 2(त) में परिभाषित किया गया है तथा विनियमित क्षेत्र में पुनर्निर्माण की अनुमति एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20ग(2) और एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 6(IV) और नियम 7 के अनुसार दी जाती है। किसी संरक्षित संस्मारक या संरक्षित क्षेत्र के प्रतिषिद्ध या विनियमित क्षेत्र में स्थित किसी भी प्रकार के भवन या सरंचना, जो प्राकृतिक आपदाओं से ध्वस्त या क्षतिग्रस्त हो गयी है, और जिसकी मरम्मत नहीं की जा सकती है, के मामले में पुनर्निर्माण की एएमएएसआर (विरासत उपनियमों का निर्धारण और सक्षम प्राधिकारी के अन्य कार्य) नियम, 2011 के नियम 16 के अनुसार दी जाती है। प्राकृतिक आपदा के कारण क्षतिग्रस्त भवन अथवा संरचना के पुनर्निर्माण की अनुमति उसी सीमा तक दी जाएगी जितनी कि क्षति हुई है। पुनर्निर्माण के मामले में पुरानी इमारत के प्रतिस्थापन के रूप में नई संरचना या इमारत को पहले से मौजूद संरचना के अनुसार उसी क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर सीमाओं का पालन करना होगा। अग्रभाग में असंगत सामग्री जैसे ग्लेज़िंग, मेटल क्लैडिंग, एल्युमीनियम

कम्पोजिट पैनल (एसीपी), हाई प्रेशर लैमिनेट्स (एचपीएल), टाइल्स, लैमिनेट्स के उपयोग की अनुमति नहीं होगी। नई संरचना संरक्षित संसंस्मारक के धरोहर क्षेत्र और उसके आसपास के क्षेत्र के साथ मेल खाती और उसके अनुरूप होनी चाहिए।

6.13.3 नया निर्माण:

6.13.3 क प्रतिषिद्ध क्षेत्र:

एएमएएसआर अधिनियम, 1958, यथा संशोधित, की धारा 20क(4) के अनुसार, संरक्षित संस्मारक के प्रतिषिद्ध क्षेत्र के भीतर किसी भी सार्वजनिक कार्य या जनता के लिए आवश्यक परियोजना या अन्य निर्माण सहित किसी भी नए निर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी।

6.13.3 ख विनियमित क्षेत्र:

चूंकि स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा कोई भूमि-उपयोग योजना/मास्टर प्लान/ज़ोनिंग विनियम तैयार नहीं किया गया है, इसलिए इस धरोहर उप-विधि में निर्धारित ऊँचाई और अन्य भवन संबंधी मापदंड संरक्षित संस्मारक के विनियमित क्षेत्र में सभी प्रकार के निर्माण के लिए लागू होंगे। आवास विभाग, उत्तराखंड सरकार द्वारा तैयार "भवन निर्माण एवं विकास अधिनियम, उत्तराखंड, 2011" में निर्दिष्ट सभी विकास नियंत्रण मापदंड और भवन विनियम, जब भी संशोधित किए जाएँगे, लागू होंगे। हालाँकि, इस दस्तावेज़ में निर्दिष्ट ऊँचाई और अन्य मापदंड संरक्षित संस्मारक के विनियमित क्षेत्र में लागू होंगे।

संस्मारक के विनियमित क्षेत्र में भूमि के कुछ हिस्से, जो उत्तराखंड के वन विभाग के अधिकार क्षेत्र में आते हैं, को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

1. **स्थल पर नए निर्माण की ऊंचाई (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन कक्ष, एचवीएसी इकाई, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, टैरेस गार्डन की पेंटहाउस संरचना आदि या छत पर कोई अन्य सेवाएं सहित):**

नए निर्माण या मौजूदा इमारतों में परिवर्धन/परिवर्तन के लिए अधिकतम ऊंचाई सीमा **7.50 मीटर** से अधिक नहीं होगी (ममटी, पैरापेट, जल भंडारण टैंक, मशीन कक्ष, एचवीएसी इकाई, सौर पैनल, वर्षा जल संचयन प्रणाली, टैरेस गार्डन की पेंटहाउस संरचना आदि या छत पर कोई अन्य सेवाएं सहित)।

जहां तक संभव हो, संरक्षित संस्मारक की संरचनात्मक सुरक्षा पर किसी प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए बेसमेंट के निर्माण को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. **उपयोग:**

वर्तमान भूमि उपयोग को बरकरार रखा जा सकता है।

3. अग्रभाग डिजाइन:

(i) पारंपरिक स्थानीय निर्माण सामग्री का उपयोग करते हुए स्थानीय वास्तुकला को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(ii) नए घरों के निर्माण के लिए पारंपरिक गढ़वाल वास्तुकला को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। पारंपरिक गढ़वाल वास्तुकला में पाए जाने वाले वास्तुशिल्प तत्वों की शैली और अनुपात का यथासंभव पालन किया जाना चाहिए।

(iii) नए निर्माण का अग्रभाग डिजाइन प्रकृति में न्यूनतम होना चाहिए, ताकि यह संरक्षित संस्मारक और आसपास के क्षेत्र की समग्र विरासत विशेषता को प्रभावित न करे। अग्रभाग का डिज़ाइन सूक्ष्म, प्लास्टर किया हुआ और मिट्टी के रंगों (सफेद, ग्रे, बेज, भूरा आदि) में पेंट किया होना चाहिए।

(iv) सभी ऐतिहासिक इमारतों, दुकानों के अग्रभागों को मूल डिजाइन (ब्रैकेट, छज्जा, मेहराबदार दरवाजे, खिड़कियां आदि की श्रृंखला) के अनुसार बनाए रखा जाना चाहिए।

(v) प्लंबिंग और बिजली की सेवाओं को व्यवस्थित किया जाना चाहिए, न कि भवन के बाहरी हिस्से में।

4. छत का डिज़ाइन:

(i) स्लेट टाइलों के साथ पारंपरिक ढलान वाली छत प्रणाली का उपयोग किया जा सकता है क्योंकि वे जलवायु के अनुकूल हैं। नई छत के निर्माण के लिए, स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए और जगह की प्रामाणिकता और सामंजस्य बनाए रखा जाना चाहिए।

(ii) इमारतों की छत पर एल्युमिनियम, फाइबर ग्लास, पॉलीकार्बोनेट या इसी तरह की सामग्री का उपयोग करके अस्थायी प्रकृति की संरचनाओं का निर्माण, जहाँ तक संभव हो हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

(iii) सभी सेवाएँ जैसे कि बड़ी एयर कंडीशनिंग इकाइयाँ, छत पर पानी के भंडारण टैंक या छत पर रखे बड़े जनरेटर सेट को स्क्रीन दीवारों (ईंट/सीमेंट शीट, लौवर, जालियाँ या ऐसे अन्य डिज़ाइन तत्व) का उपयोग करके ढक दिया जाना चाहिए। इन सभी सेवाओं को अधिकतम स्वीकार्य ऊँचाई में शामिल किया जाना चाहिए।

5. निर्माण सामग्री:

संरक्षित संस्मारक के सभी सड़क के अग्रभागों पर निर्माण सामग्री और रंग में एकरूपता बनाए रखी जा सकती है। बाहरी सज्जा के लिए आधुनिक निर्माण सामग्री जैसे एल्युमीनियम क्लैडिंग, ग्लास ईंटें और किसी भी अन्य सिंथेटिक टाइल या सामग्री का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। ईंट और पत्थर जैसी पारंपरिक निर्माण सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए।

6. रंग:

बाहरी रंग संरक्षित संस्मारक के साथ सामंजस्य रखते हुए तटस्थ स्वर का होना चाहिए, जैसे कि बफ बलुआ पत्थर का रंग, सफेद, बेज और अन्य मिट्टी के रंग, जो संरक्षित संस्मारक और उसके आसपास के वातावरण के साथ तीव्र विरोधाभास पैदा न करें।

7. अन्य विनियम:

मेट्रो रेल सिस्टम (भूमिगत या एलिवेटेड), रेल या सड़क ओवर ब्रिज, फ्लाई ओवर, बहु-स्तरीय पार्किंग सुविधाएं या इसी तरह की विकास परियोजनाओं और सार्वजनिक हित में संस्थागत भवनों के निर्माण या जो जनता के लिए आवश्यक हैं, जैसे बड़े पैमाने पर सार्वजनिक बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं के निर्माण के प्रस्ताव एक विस्तृत विरासत प्रभाव आकलन (एचआईए) रिपोर्ट के अधीन होंगे। ऐसी परियोजनाओं पर तभी विचार किया जा सकता है जब यह स्पष्ट रूप से स्थापित हो जाए कि वे संरक्षित संस्मारक या उसके आस-पास के क्षेत्र के संरक्षण, सुरक्षा, संरक्षा, दृश्य अखंडता या पहुंच पर कोई महत्वपूर्ण प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेंगे।

6.14 आगंतुक सुविधाएं और प्रसाधन:

जहां तक व्यवहार्य हो संरक्षित संस्मारक के आसपास अतिरिक्त आगंतुक सुविधाएं और प्रसाधन उपलब्ध कराने पर विचार किया जा सकते हैं।

अध्याय 7
स्थल विशिष्ट सिफारिशें

7.1 स्थल विशिष्ट सिफ़ारिशें:

i. संरक्षित संस्मारक या उसके आस-पास के क्षेत्रों में एलईडी या डिजिटल संकेत, प्लास्टिक फाइबर ग्लास या किसी अन्य अत्यधिक परावर्तक सिंथेटिक सामग्री का उपयोग यथासंभव हतोत्साहित किया जाता है।

ii. संरक्षित संस्मारक के पास, विशेष रूप से संरक्षित संस्मारक की दीवारों पर होर्डिंग, बिलबोर्ड और पोस्टर के रूप में किसी भी विज्ञापन की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

iii. संरक्षित संस्मारक की परिधि से सटे भवनों में किसी भी मरम्मत और नवीनीकरण की सावधानीपूर्वक निगरानी की जानी चाहिए ताकि संरक्षित संस्मारक की संरचनात्मक अखंडता की रक्षा की जा सके।

iv. संरक्षित संस्मारक के आसपास के क्षेत्र में आवागमन के लिए पर्यावरण के अनुकूल वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है ताकि वाहनों से निकलने वाले उत्सर्जन और कंपन के कारण संस्मारक पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को कम किया जा सके।

v. वर्षा जल संचयन जैसी सर्वोत्तम प्रणालियों सहित हरित भवनों के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

7.2 अन्य सिफारिशें:

i. जब भी मास्टर प्लान, जोनल प्लान या विकास योजना तैयार की जाए या उसमें संशोधन किया जाए तो उसमें राष्ट्रीय महत्व के सभी संरक्षित संस्मारकों और उनके प्रतिषिद्ध और विनियमित क्षेत्रों को स्पष्ट रूप से दर्शाया जाना चाहिए।

ii. क्षेत्र को प्लास्टिक और पॉलीथीन मुक्त क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिए।

iii. सांस्कृतिक विरासत स्थलों और परिसरों के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन दिशानिर्देश https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf पर देखे जा सकते हैं।

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CULTURE
NATIONAL MONUMENTS AUTHORITY

In exercise of the powers conferred by section 20E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended, read with Rule 22 of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and Other Functions of the Competent Authority) Rule, 2011, the following Heritage Bye-Laws for the Protected Monument **"Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand"**, prepared by the Competent Authority in consultation with School of Architecture and Planning, DIT University, Dehradun, were published on 06.09.2024, as required by sub-rule 2 of Rule 18 of the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, for inviting objections or suggestions from the public;

The objections/suggestions, received before the specified date have duly been considered by the National Monuments Authority in consultation with the Competent Authority.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (5) of the Section 20E of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended, the National Monuments Authority, hereby makes the following bye-laws, namely:

Heritage Bye-Laws for "Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand"

CHAPTER 1

PRELIMINARY

1.1 Short title, Extent and Commencements:

(i) These bye-laws may be called the National Monument Authority Heritage bye-laws, 2025 of the Protected Monument **"Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand"**.

(ii) They shall extend to the entire Prohibited and Regulated Area of the Protected Monuments.

(iii) The provisions of these bye-laws shall have effect notwithstanding anything inconsistent therewith contained in any other bye-laws, whether made before or after the commencement of these bye-laws, or in any instrument having effect by virtue of any bye-laws. It shall not be obligatory to carry out amendments in these bye-laws to make them consistent with any other bye-laws.

(iv) They shall come into force with effect from the date of their publication.

1.2 Definitions:

1. In these bye-laws, unless the context otherwise requires, -

(a) "ancient monument" means any structure, erection or monument, or any tumulus or place of interment, or any cave, rock sculpture, inscription or monolith, which is of historical, archaeological or artistic interest and which has been in existence for not less than one hundred years, and includes -

(i) the remains of an ancient monument,

(ii) the site of an ancient monument,

(iii) such portion of land adjoining the site of an ancient monument as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving such monument, and

(iv) the means of access to, and convenient inspection of an ancient monument,

(b) "archaeological site and remains" means any area which contains or is reasonably believed to contain ruins or relics of historical or archaeological importance which have been in existence for not less than one hundred years, and includes:

(i) such portion of land adjoining the area as may be required for fencing or covering in or otherwise preserving it, and

(ii) the means of access to, and convenient inspection of the area,

(c) "Act" means the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958, as amended,

(d) "Archaeological Officer" means an officer of the Department of Archaeology of the Government of India not lower in rank than Assistant Superintendent of Archaeology,

(e) "Authority" means the National Monuments Authority constituted under Section 20F of the Act,

(f) "Competent Authority" means an officer not below the rank of Director of archaeology or Commissioner of archaeology of the Central or State Government or equivalent rank, specified, by notification in the Official Gazette, as the competent authority by the Central Government to perform functions under this Act:

Provided that the Central Government may, by notification in the Official Gazette, specify different competent authorities for the purpose of section 20C, 20D and 20E,

(g) "construction" means any erection of a structure or a building, including any addition or extension thereto either vertically or horizontally, but does not include any re-construction, repair and renovation of an existing structure or building, or, construction, maintenance and cleansing of drains and drainage works and of public latrines, urinals and similar conveniences, or, the construction and maintenance of works meant for providing supply or water

for public, or, the construction or maintenance, extension, management for supply and distribution of electricity to the public or provision for similar facilities for public,

(h) "Government" means The Government of India,

(i) "maintain", with its grammatical variations and cognate expressions, includes the fencing, covering in, repairing, restoring and cleansing of a Protected Monument, and the doing of any act which may be necessary for the purpose of preserving a Protected Monument or of securing convenient access thereto,

(j) "owner" includes:

(i) A joint owner invested with powers of management on behalf of himself and other joint owners and the successor-in-title of any such owner, and

(ii) Any manager or trustee exercising powers of management and the successor-in- office of any such manager or trustee,

(k) "prescribed" means prescribed by rules made under this Act;

(l) "Prohibited Area" means any area specified or declared to be a Prohibited Area under section 20A,

(m) "Protected Area" means any archaeological site and remains which is declared to be of national importance by or under this Act,

(n) "Protected Monument" means any ancient monument which is declared to be of national importance by or under this Act,

(o) "Regulated Area" means any area specified or declared to be a Regulated Area under section 20B,

(p) "re-construction" means any erection of a structure or building to its pre-existing structure, having the same horizontal and vertical limits,

(q) "repair and renovation" means alterations to a pre-existing structure or building, but shall not include construction or re-construction,

2. The words and expressions used herein and not defined shall have the same meaning as assigned in the Act or the rules made there under.

CHAPTER 2

Background of the Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended

2.1 Background of the Act:

The Heritage Bye-Laws are intended to guide physical, social and economic interventions within 300 metres in all directions of the Protected Monument. The 300 metres area has been divided into two parts (i) the **Prohibited Area**, the area beginning at the limit of the Protected Area or the Protected Monument and extending to a distance of 100 metres in all directions and (ii) the **Regulated Area**, the area beginning at the limit of the Prohibited Area and extending to a distance of 200 metres in all directions.

As per the provisions of the Act, no person shall undertake any construction or mining operation in the Protected Area and Prohibited Area while permission for repair and renovation of any building or structure, which existed in the Prohibited Area before 16th day of June, 1992, or which had been subsequently constructed with the approval of Director General (DG), Archaeological Survey of India (ASI) and; permission for construction, re-construction, repair or renovation of any building or structure in the Regulated Area, must be sought from the Competent Authority.

2.2 Provision of the Act related to Heritage Bye-Laws:

Section 20E of the AMASR Act, 1958, as amended and Rule 22 of the Ancient Monument and Archaeological Sites and Remains (Framing of Heritage Bye-Laws and other function of the Competent Authority) Rules 2011, specifies framing of Heritage Bye-Laws for Protected Monuments. Ibid Rule provides parameters for the preparation of Heritage Bye-Laws. Rule 18 of the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of Authority and Conduct of Business) Rules, 2011, specifies the process of approval of Heritage Bye-laws by the Authority.

2.3 Rights and Responsibilities of Applicant:

Section 20C of the AMASR Act, 1958, as amended, specifies details of application for repair and renovation in the Prohibited Area, or construction or re- construction or repair or renovation in the Regulated Area as described below:

(a) Any person, who owns any building or structure, which existed in a Prohibited Area before 16th day of June, 1992, or, which had been subsequently constructed with the approval of the Director General and desires to carry out any repair or renovation of such building or structure, may make an application to the Competent Authority for carrying out such repair and renovation as the case may be.

(b) Any person, who owns or possesses any building or structure or land in any Regulated Area, and desires to carry out any construction or re-construction or repair or renovation of such building or structure on such land, as the case may be, make an application to the Competent Authority for carrying out construction or re-construction or repair or renovation as the case may be.

(c) It is the responsibility of the applicant to submit all relevant information and abide by the National Monuments Authority (Conditions of Service of Chairman and Members of the Authority and Conduct of Business) Rules, 2011.

CHAPTER 3

Location and Setting of the Protected Monument- Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand

3.1 Location and Setting of the Monument:

The Protected Monument is situated 18 kilometres from Karnaprayag, a village in Chamoli district, Uttarakhand. The village is located on the bank of Ata Gad, a tributary of the Pindar River.

The geographical coordinates are: **Latitude** 30°09'22.4"N, **Longitude** 79°13'35.4"E. The Protected Monument is along National Highway-109 (NH-109).

The nearest railway station is Rishikesh Railway Station, 202 kilometres away, and the nearest airport is Jolly Grant Airport, Dehradun, 210 kilometres away from the Protected Monument.

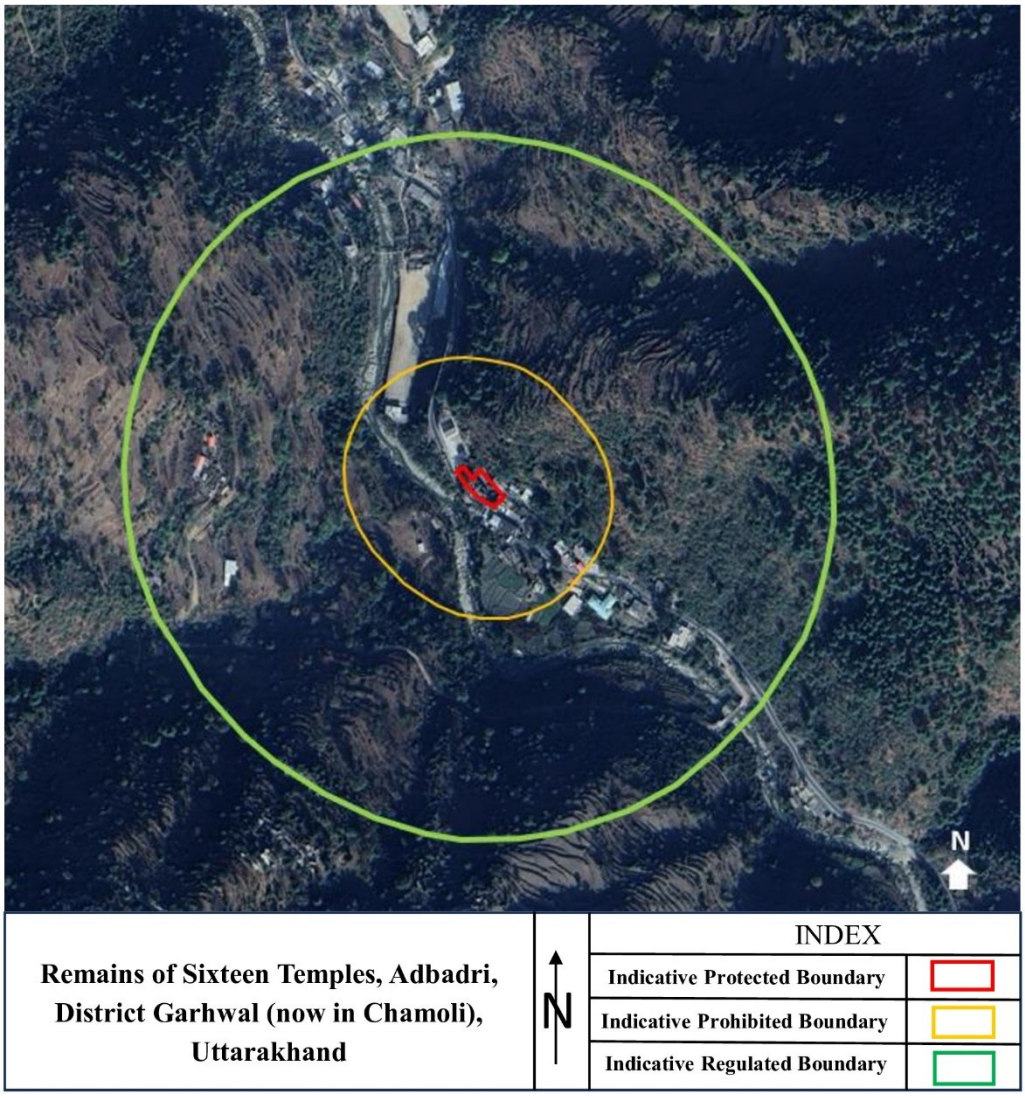

Image 1: Google Map showing the location of Protected Monument Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand

3.2 Protected Boundary of the Monument:

The Protected Boundary of the Protected Monument- Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand may be seen at **Annexure-I**.

3.2.1 Notification Map/Plan as per ASI Records:

Notification of Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand may be seen in **Annexure-II**.

3.3 History of the Monument:

The construction of these temples dates between the 8th and 12th centuries C.E. The central temple is dedicated to Lord Vishnu, while other temples in the group are attributed to deities such as Shri Lakshminarayan, Gaurishankar, Annapurna, Surya, Satyanarayan, Ganesha, Shiva, Garuda, Durga, and Janki, among others.[1]

3.4 Description of Monument (architectural features, elements, materials, etc):

The primary shrine within the complex is dedicated to Lord Vishnu, also recognized as Adbadri. The temple is built on an elevated platform called Jagati, with the mukha-mandapa accessible via a set of steps. The temple's layout comprises three main sections: *the mukha-mandapa*, *sabha-mandapa*, and *garbhagriha*, which houses the idol. Both the *mukha-mandapa* and *sabha-mandapa* are adorned with low-pitched pent roofs. The main temple's *Shikhara*, constructed over the *garbhagriha*, is curvilinear and decorated with intricate carvings and sculptural motifs, reflecting the typical Nagara style of architecture.

In comparison, the other temples are smaller in size and layout. All the temples are constructed from locally sourced stone, with varying ornamentation and motifs on the columns and doorways. The other thirteen temples are:

1. Ganesh Temple
2. Ram-Lakshman Temple
3. Kali Mata Temple
4. Janaki Temple
5. Shiva Temple
6. Gaurishankar Temple
7. Hanuman Temple
8. Garuda Temple
9. Annapurna Temple
10. Laxminarayan Temple
11. Kuber Temple
12. Sun Temple
13. Satyanarayan Temple

[1] Archaeological Survey of India (Dehradun Circle)

3.5 Current Status:

3.5.1 Condition of the Monument- condition assessment:

The maintenance and preservation of the Protected Monument is with the exclusive domain of Archaeological Survey of India. The photographs depicting the present condition of the Protected Monument are appended in **Annexure-III**.

3.5.2 Daily footfall and occasional gathering number:

The footfall is approximately 150 visitors per day. However, during festivities, it increases more than 500 visitors per day.[2]

[2] Archaeological Survey of India (Dehradun Circle)

CHAPTER 4

Existing Zoning, if any, in the Local Area Development Plans

4.1 Existing Zoning:

No zoning regulations or master plan have been prepared as yet by the Local Authorities. The Protected Monument is situated within the area of the **Adbadri Gram Panchayat**.

4.2 Existing Guidelines of the local bodies:

No Land-Use Plan, Master Plan, Zoning Regulations have been prepared by the Local Authorities, therefore, when formulating Land-Use Plans, Master Plans, Zoning Regulations, etc., it is imperative to consider and incorporate the provisions outlined in these Heritage Bye-Laws.

All other development control norms, building regulations and structural safety related provisions for earthquake, landslide, fire, etc., specified in the **"Bhavan Nirman Evam Vikas Upvidhi, Uttarakhand, 2011"**, prepared by the Housing Department, Government of Uttarakhand, as and when amended shall be applicable. However, the height and other parameters specified in Chapter 6, section 6.13 of these Heritage Bye-Laws shall be applicable in the Regulated Area of the Protected Monument.

CHAPTER 5

Information as per First Schedule, Rule 21(1)/ Survey Plan of the Prohibited and the Regulated Areas on the basis of boundaries defined in Archeological Survey of India Records

5.1 Survey Plan of Monument:

Survey Plan of Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand may be seen at **Annexure-I**.

5.2 Analysis of surveyed data:

5.2.1 Prohibited Area/Regulated Area in sqm and their salient features:

Protected Area is 0.16 Acres, approximately.

Prohibited Area is 10.75 Acres, approximately.

Regulated Area is 78.46 Acres, approximately.

5.2.2 Description of built-up area:

North: In the Prohibited Area, a few residential buildings of vernacular character are present. In the Regulated Area, a cluster of residential and retail buildings is present.

East: In the Prohibited Area, State Bank of India branch, Post Office, and a few residential buildings are present. In the Regulated Area, a few residential and commercial buildings, the Garhwal Mandal Vikas Nigam (GMVN) guest house, a police station, and the Adbadri Tehsil office are present.

South: In the Prohibited Area, a few residences and some retail buildings are present. No construction is present in the Regulated Area.

West: No construction is present in the Prohibited Area. In the Regulated Area, there is a cluster of residential buildings.

5.2.3 Description of green/open spaces:

North: In the Prohibited Area, there is an open area with moderately dense forest cover on sloping terrain. In the Regulated Area, open area with vegetation and a hill range is present.

East: In the Prohibited Area, a few vacant plots are present within the built-up area. In the Regulated Area, there are open areas with dense forest along the hill range.

South: In the Prohibited Area, there is an open area with moderately dense forest cover on sloping terrain along the River Ata Gad. In the Regulated Area, there is an open area along the river and the range of hills.

West: In the Prohibited Area, there are open areas and vacant land with vegetation. In the Regulated Area, there are open areas and vacant land with vegetation on the range of hills.

5.2.4 Area covered under circulation- roads, footpaths etc:

The Protected Monument is directly accessed by NH- 109 connecting the nearby villages and cities.

5.2.5 Existing Heights of buildings:

North: The height of the structures/buildings ranges from G to G+2 structures.

East: The height of the structures/buildings ranges from G to G+2 structures.

South: The height of the structures/buildings ranges from G to G+1structures.

West: The height of the structures/buildings ranges from G to G+1 structures.

5.2.6 State Protected Monuments and listed Heritage Buildings by Local Authorities, if available within the Prohibited/Regulated Area:

There are no State Protected Monument and listed Heritage Buildings by local authorities within Prohibited and Regulated Area.

5.2.7 Public Amenities:

Public amenities such as drinking water facilities, public toilets, signage, and parking are present.

5.2.8 Access to the Monument:

The Protected Monument is located along the main road. The village is well connected by NH-109 to nearby villages and towns.

5.2.9 Infrastructure services (water supply, storm water drainage, sewage, solid waste management, parking etc.):

The basic infrastructure facilities, such as water supply, stormwater drainage, sewage and solid waste management are present.

5.2.10 Proposed zoning of the area as per guidelines of the local bodies:

There is no development plan prepared and made available in the public domain by any of the current Local Authorities. Therefore, at present, no zoning is proposed.

CHAPTER 6

Architectural, Historical and Archeological Value of Monument

6.1 Architectural, Historical and Archeological Value of the Monument:

Architectural Value:

The primary shrine dedicated to Lord Vishnu, also recognized as Adbadri, stands on an elevated platform called *Jagati*. The temple's layout includes the *mukha-mandapa, sabha-mandapa*, and *garbhagriha*. Both the *mukha-mandapa* and *sabha-mandapa* have low-pitched pent roofs, and the main temple's *Shikhara*, constructed over the *garbhagriha*, is curvilinear and adorned with intricate carvings and sculptural motifs, showcasing the Nagara style of architecture. The other temples, though smaller, are constructed from locally sourced stone, each with unique ornamentation and motifs on columns and doorways.

Historical Value:

The temples were constructed between the 8th and 12th centuries C.E., offering a glimpse into the historical context of this period. The central temple is dedicated to Lord Vishnu, while other temples in the group are attributed to deities such as Shri Lakshminarayan, Gaurishankar, Annapurna, Surya, Satyanarayan, Ganesha, Shiva, Garuda, Durga, and Janki. This diversity reflects the rich spiritual traditions of the era.

Archaeological Value:

The construction materials and techniques used in these temples provide significant archaeological insights into the period's craftsmanship and architectural practices.

6.2 Sensitivity of the Monument(s) (e.g. development pressure, urbanization, population pressure, etc.):

Although the region is not densely urbanized, gradual encroachment due to expanding settlements poses a threat to the Protected Monument. Currently, construction activities are non-existent on both the Northern and Southern sides of the Protected Monument due to the challenging terrain. However, as it is situated on the main road, development pressure along the road poses a significant risk. Unplanned infrastructure projects and commercial developments could encroach upon the surrounding area, disrupting the visual and spiritual ambiance of the Protected Monument.

6.3 Visibility from the Protected Monument or Area and visibility from Regulated Area:

Hilly terrain with moderate to dense forest cover is visible from the Protected Monument on the Eastern, Western and Southern sides. The houses along the boundary wall at an elevated level are visible from the Northern side of the Protected Monument. The main access road and Ata Gad, a tributary of the Pindar River, are visible from the Southern side of the Protected Monument.

Due to its location in hilly terrain, the Protected Monument is visible from the Southern side within the Prohibited and Regulated Areas. However, visibility is limited from the other three sides due to the terrain and construction along the main road.

6.4 Land-use to be identified:

The Prohibited Area largely comprises vacant land on sloping terrain with forest cover. While residential, institutional and retail buildings are present in the Regulated Area.

6.5 Archeological heritage remains other than Protected Monument:

No archaeological heritage remains are found as yet within the Prohibited and the Regulated Areas of the Protected Monument.

6.6 Cultural Landscapes:

The village situated on a hilly terrain, along the river Ata Gad forms an integral part of the cultural landscape. Its location in relation to other significant religious sites and the Panch Badris enhances its importance as a place of religious significance.

6.7 Significant natural landscapes that form part of cultural landscape and help in protecting monuments from environmental pollution:

The presence of the Protected Monument along the river and the region's topography has greatly enriched the cultural landscape. The temple is constructed on the riverbank at an elevated position. The natural topography, with its hilly terrain and proximity to the river, contributes to the Protected Monument’s isolation from urbanization, thereby minimizing exposure to environmental pollution.

6.8 Usage of open space and constructions:

Open spaces are primarily used for vacant plots and forest cover, while constructions are used for residential and commercial purposes.

6.9 Traditional, historical, and cultural activities:

Traditional rituals such as pujas, aartis, and yatras form an integral part of daily life at Adbadri, preserving age-old customs and practices handed down through generations. In addition to daily rituals, annual festivals and religious activities such as Maha Shivratri, Adbadri Nautha Kauthig Mela, Basant Panchami and Akshaya Tritiya are also celebrated at the temple complex.

6.10 Skyline as visible from the monuments and from Regulated Areas:

The skyline of the mountain and nearby villages is visible on the Southern, Western and Eastern side of the Protected Monument. The hilly terrain on the Northern side obstructs the view from the Protected Monument.

From the Regulated Area, the Protected Monument, terrain, and construction along the main road are visible.

6.11 Traditional Architecture:

Vernacular construction influenced by Kath-Kuni can be seen in a few traditional houses. Examples of mud and timber houses with slate roofing are also present.

6.12 Development Plan, as available, by the local authorities:

There is no development plan prepared or made available in the public domain by any of the current Local Authorities.

6.13 Permissible Building related parameters:

6.13.1 Repair and Renovation (in Prohibited and Regulated area):

Internal changes and adaptive reuse may be generally permitted. However, external changes shall be subject to detailed scrutiny by the Competent Authority. Such changes which include retrofitting/renovation may be permitted when the building is structurally weak or unsafe or when it has been adversely impacted by any natural calamity and renovation is absolutely necessary. Original building vocabulary and layout along with built-open relationships are to be adhered to. General repair and upkeep of buildings will be permissible, subject to prior permission from the Competent Authority.

The repair and renovation in building/structures should be sympathetic and congruous with the heritage character of the Protected Monument and its surrounding areas. New cladding materials like Aluminum Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), laminates, tiling or glazing will not be permitted. Use of locally available building material should be encouraged in carrying out repair and renovation works.

6.13.2 Reconstruction:

Reconstruction is defined in Section 2(k) of Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains (AMASR) Act, 1958, as amended. Permission for reconstruction in Regulated Area is accorded as per Section 20C(2) of the AMASR Act, 1958, as amended, and Rule 6 (IV) and Rule 7 AMASR (Framing of heritage Bye-laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. In case of any type of building or structure located in the Prohibited or Regulated Area of the Protected Monument or Protected Area, collapsed or damaged and found beyond repair due to natural calamities, the permission for reconstruction is accorded as per Rule 16 of AMASR (Framing of heritage Bye-laws and other functions of the Competent Authority) Rules, 2011. Reconstruction of building or structure damaged due to natural calamity shall be permissible only to the extent it is damaged. The new structure or building as a replacement to the older building in case of reconstruction shall follow the same horizontal and vertical limits as per the pre-existing structure. The use of incongruous materials in the façade such as glazing, metal cladding, Aluminium Composite Panels (ACP), High Pressure Laminates (HPL), tiles, laminates will not be permissible. The new structure should be sympathetic and congruous with the heritage character of the Protected Monuments and its surrounding area.

6.13.3 New Construction:

6.13.3 A Prohibited Area:

As per Section 20A(4) of AMASR Act, 1958 as amended, no new construction including carrying out any public work or project essential to the public or other construction, shall be permitted within the Prohibited Area of the Protected Monument.

6.13.3 B Regulated Area:

Since no land-use plan/ master plan/ zoning regulations have been prepared by the local Authorities, the height and other building related parameters prescribed in this Heritage Bye-Laws will be applicable for all types of construction in the Regulated Area of the Protected Monument. All the development control norms and building regulations specified in the "Bhavan Nirman Evam Vikas Upvidhi, Uttarakhand, 2011" prepared by the Housing Department, Government of Uttarakhand, as and when amended shall be applicable. However, the height and other parameters specified in this document shall be applicable in the Regulated Area of the Protected Monument.

Portions of the land in the Regulated Area of the monument, lying within the jurisdiction of the Forest Department of Uttarakhand, should be taken into consideration.

1. Height of the new construction on the site (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, HVAC unit, solar panel, rain water harvesting system, penthouse structures of terrace garden etc.) or any other services on the roof:

The maximum height limit for new construction or additions/alteration to existing buildings shall not exceed **7.50 metres** (including mumty, parapet, water storage tank, machine room, generator room, HVAC unit, solar panel, rainwater harvesting system, penthouse structures of terrace garden and other similar structures) or any other services on the roof.

Construction of the basement is discouraged to mitigate any adverse impact on the structural safety of the Protected Monument.

2. Usage:

Present land use may be retained.

3. Façade Design:

(i) Vernacular architecture using traditional local building materials should be encouraged.

(ii) Traditional Garhwal architecture should be promoted for the construction of new houses. Style and proportion of the architectural elements found in the traditional Garhwal architecture should be followed as far as possible.

(iii) The façade design of new construction must be minimalistic in nature, so that it does not overpower the Protected Monument and the overall heritage character of the surrounding area. The façade design should be subtle, plastered and painted in earthy colours (white, grey, beige, brown etc.)

(iv) Façades of all historic buildings, shop houses need to be maintained as per original design (series of brackets, chajjas, arched doors, windows etc.).

(v) Plumbing and electrical services shall be organized and not on the exterior of the building.

4. Roof design:

(i) Traditional Sloping roof system with slate tiles may be used as they are climate responsive. For new roof constructions, locally available material should be used, and the authenticity and harmony of the place should be maintained.

(ii) Erection of structures, even of temporary nature, using materials such as aluminium, fibre glass, polycarbonate or similar materials should be discouraged as far as possible on the roof of the building.

(iii) All services such as large air conditioning units, rooftop water storage tanks or large generator sets placed on the roof to be screened off using screen walls (brick/cements sheets, louvres, jaalis or other such design elements). All of these services should be included in the maximum permissible height.

5. Building Material:

Consistency in building materials and colour along all street façades of the Protected Monument may be maintained. Modern building materials such as Aluminium cladding, glass bricks and any other synthetic tiles or materials should be discouraged for exterior finishes. Traditional building materials such as brick and stone should be used.

6. Colour:

The exterior colour should be of a neutral tone in harmony with the Protected Monument such as buff sandstone colour, white, beige and other earth colours which do not create a harsh contrast with the Protected Monument and its immediate surroundings.

7. Other Regulations:

Proposals for the construction of large-scale public infrastructure projects such as Metro Rail Systems (underground or elevated), rail or road over bridges, flyovers, multi-level parking facilities, or similar development projects and construction of institutional buildings in public interest or which are essential for public, shall be subject to a detailed Heritage Impact Assessment (HIA) Report. Such projects may be considered only if it is clearly established that they will not cause any significant adverse impact on the preservation, safety, security, visual integrity or accessibility of the Protected Monument or its immediate surroundings.

6.14 Visitor Facilities and amenities:

Additional Visitor facilities and amenities may be considered in the vicinity of the Protected Monument as per feasibility.

CHAPTER 7

Site Specific Recommendations

7.1 Site specific recommendations:

i. LED or digital signs, plastic fibre glass, or any other highly reflective synthetic material are discouraged as far as possible for signages in the vicinity of the Protected Monument or its immediate surrounding areas.

ii. No advertisements in the form of hoardings, bill-boards and posters should be permitted near the Protected Monument, especially on the boundaries of the Protected Monument.

iii. Any repair and renovation in the buildings abutting the perimeter of the Protected Monument should be carefully supervised so as to protect the structural integrity of the Protected Monument.

iv. Use of Eco-Friendly vehicles for movement in the vicinity of the Protected Monument may be encouraged to mitigate adverse impact on the monument due to vehicular emissions and vibrations.

v. Construction of green buildings including best practices like rainwater harvesting should be encouraged.

7.2 Other Recommendations:

i. Whenever the Master Plan, Zonal Plan, or Development Plan is prepared or amended, it should clearly show all Protected Monuments of national importance and their Prohibited and Regulated Areas.

ii. The area should be declared as Plastic and Polythene free zone.

iii. National Disaster Management Guidelines for Cultural Heritage Sites and Precincts may be referred at https://nidm.gov.in/PDF/pubs/NDMA/20.pdf

अनुलग्नक
ANNEXURE

अनुलग्नक-I
ANNEXURE-I

सोलह मंदिरों के अवशेष, आदिबद्री, जिला-गढ़वाल (अब चमोली में), उत्तराखंड की सर्वेक्षण योजना
Survey Plan of the Remains of Sixteen Temples, Adbadri, District-Garhwal (now in Chamoli), Uttarakhand

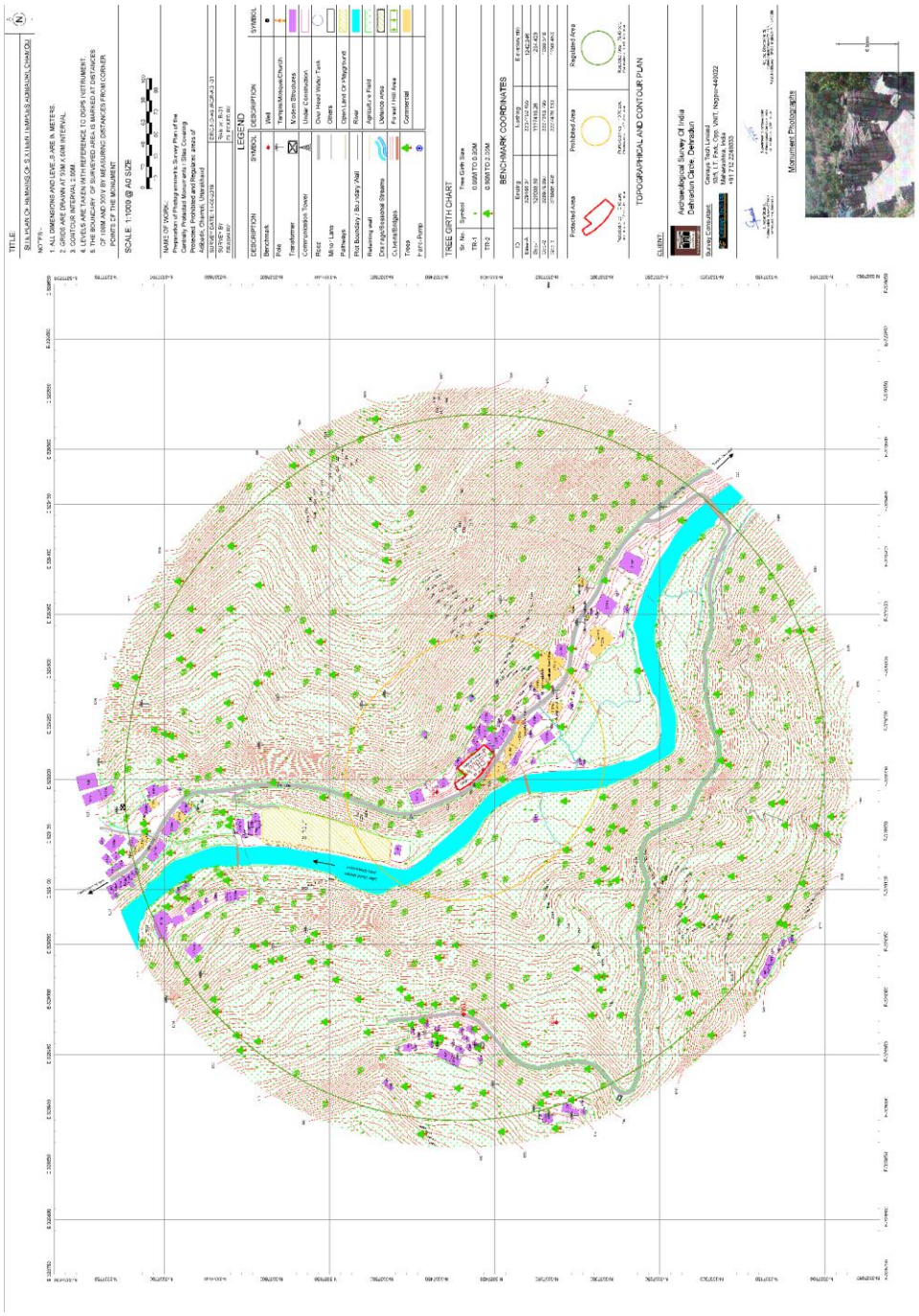

अनुलग्नक-II
ANNEXURE-II

संस्मारक की अधिसूचना
Notification of the Monument

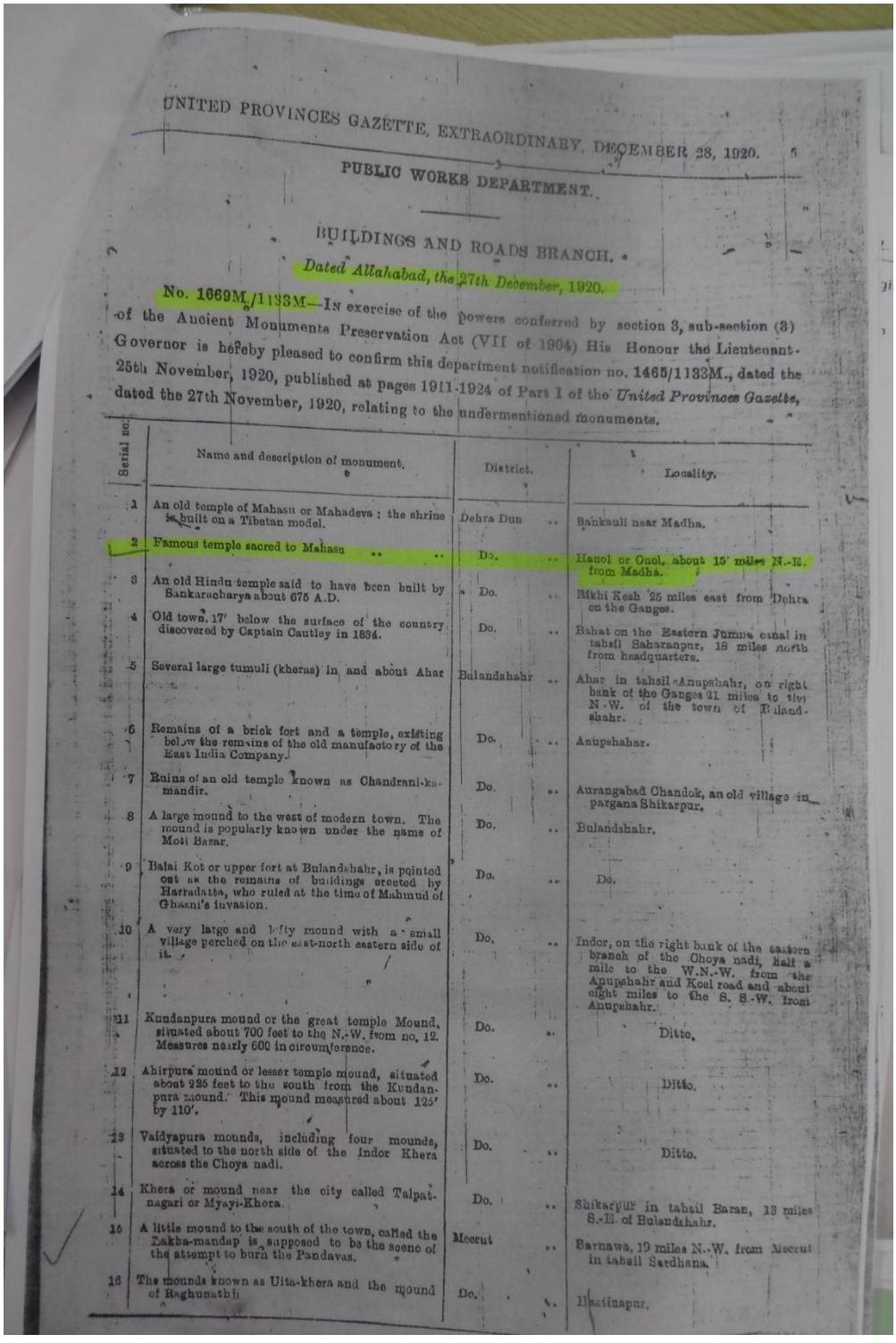

UNITED PROVINCES GAZETTE, EXTRAORDINARY, DECEMBER 28, 1920.

PUBLIC WORKS DEPARTMENT.

BUILDINGS AND ROADS BRANCH.

Dated Allahabad, the 27th December, 1920.

No. 1669M./1133M.—In exercise of the powers conferred by section 3, sub-section (3) of the Ancient Monuments Preservation Act (VII of 1904) His Honour the Lieutenant-Governor is hereby pleased to confirm this department notification no. 1465/1133M., dated the 25th November, 1920, published at pages 1911-1924 of Part I of the *United Provinces Gazette*, dated the 27th November, 1920, relating to the undermentioned monuments.

Serial no.	Name and description of monument.	District.	Locality.
1	An old temple of Mahasu or Mahadeva : the shrine is built on a Tibetan model.	Dehra Dun ..	Bankauli near Madha.
2	Famous temple sacred to Mahasu	Do. ..	Hanol or Onol, about 15 miles N.-E. from Madha.
3	An old Hindu temple said to have been built by Sankaracharya about 675 A.D.	Do. ..	Rikhi Kesh 25 miles east from Dehra on the Ganges.
4	Old town, 17' below the surface of the country discovered by Captain Cautley in 1834.	Do. ..	Bahat on the Eastern Jumna canal in tahsil Saharanpur, 18 miles north from headquarters.
5	Several large tumuli (kheras) in and about Ahar	Bulandshahr ..	Ahar in tahsil Anupshahr, on right bank of the Ganges 21 miles to the N.-W. of the town of Bulandshahr.
6	Remains of a brick fort and a temple, existing below the remains of the old manufactory of the East India Company.	Do. ..	Anupshahar.
7	Ruins of an old temple known as Chandrani-ka-mandir.	Do. ..	Aurangabad Chandok, an old village in pargana Shikarpur.
8	A large mound to the west of modern town. The mound is popularly known under the name of Moti Bazar.	Do. ..	Bulandshahr.
9	Balai Kot or upper fort at Bulandshahr, is pointed out as the remains of buildings erected by Harradatta, who ruled at the time of Mahmud of Ghazni's invasion.	Do. ..	Do.
10	A very large and lofty mound with a small village perched on the east-north eastern side of it.	Do. ..	Indor, on the right bank of the eastern branch of the Choya nadi, half a mile to the W.N.-W. from the Anupshahr and Koel road and about eight miles to the S.-W. from Anupshahr.
11	Kundanpura mound or the great temple Mound, situated about 700 feet to the N.-W. from no. 12. Measures nearly 600 in circumference.	Do. ..	Ditto.
12	Ahirpura mound or lesser temple mound, situated about 225 feet to the south from the Kundanpura mound. This mound measured about 125' by 110'.	Do. ..	Ditto.
13	Vaidyapura mounds, including four mounds, situated to the north side of the Indor Khera across the Choya nadi.	Do. ..	Ditto.
14	Khera or mound near the city called Talpatnagari or Myayi-Khera.	Do. ..	Shikarpur in tahsil Baran, 13 miles S.-E. of Bulandshahr.
15	A little mound to the south of the town, called the Lakha-mandap is supposed to be the scene of the attempt to burn the Pandavas.	Meerut ..	Barnawa, 19 miles N.-W. from Meerut in tahsil Sardhana.
16	The mounds known as Uita-khera and the mound of Raghunathji	Do. ..	Hastinapur.

	Name and description of monument.	District.	Locality.
269	A long low mound of ruins to the south-west of Khakundu.	Gorakhpur ..	Khakhundu, village in pargana Salempur of tahsil Deoriya, 44 miles S.-E. of Gorakhpur.
270	A large mound covered with broken bricks and a few statues to the south of Padrauna. It measures 220′ × 120′ × 14′ (high).	Do. ..	Padrauna or Parauna, tahsil, 49 miles N. N. E. of Gorakhpur.
271	A conical *stupa*-shaped mound	Do. ..	Amaoni, village about 9 miles to the north of Rudrapur.
272	Colossal statue of Vishnu, 11′ in height under a tree to the east of Rudrapur.	Do. ..	Rudrapur, town in pargana Silhat of tahsil Hata, on the eastern bank of Manjue river, 27 miles S.-S.-E. of Gorakhpur.
273	A high square-shaped mound close to the W. of Rudrapur.	Do. ..	Ditto.
274	The extensive mound situated along the ancient tank.	Do.	Sohnag, hamlet in pargana Salempur of tahsil Deoriya, 50 miles S.-E. of Gorakhpur and 3 miles S.-W. of Salempur.
275	A very high *dih* or mound apparently the remains of a Buddhist *stupa*.	Do. ..	Tarakulwa, large village in pargana Shahjahanpur of tahsil Hata, 40 miles S.-S.-E. of Gorakhpur.
276	Sanskrit inscription of a stone sugarcane press, dated Samvat 1609.	Azamgarh ..	Azamgarh
277	A square shaped mound of earth measuring 150′ × 150′.	Do. ..	Chiraiya Kot, village in tahsil Mohammadabad, 16 miles S.-E. of head-quarters.
278	An ancient site call[illegible] Garha-ka-Kot or Rajbhatka-Kot, measuring [illegible]′ × 1500′.	Do. ..	Bhatti, village 6 miles to the N.-W. of Chiraiya Kot.
279	A low mound of brick ruins 170′ × 25′ and called Sivari-ka-tila.	Do. ..	Dabhaon village in tahsil Deogaon, 36 miles S. of Azamgarh.
280	A large Hindu temple sacred to Kali in the old Ranchula fort, and several other old temples of usual style, together with the masonry well containing two stone inscriptions of Udayapaladeva.	Almora ..	Baijnath or Vaidyanatha, village in pargana Danpur of Almora tahsil.
281	Remains of a few old temples and an inscribed masonry well close to the S.-W. of the village.	Do. ..	Gangoli-hat in Champawat tahsil.
282	A large temple dedicated to the Sun ..	Do. ..	In Katarmal village pargana Baramandal Almora tahsil.
283	The romantic temple of Devipur, on the banks of the Kosi river on a low range of wooded hills.	Naini Tal ..	Kota, capital of pargana in tahsil Bhabar.
284	Remains of ancient buildings locally identified with Vairata-pattana.	Do. ..	Dhikuli, village in pargana Kota of Tahsil Bhabar.
285	An old temple sacred to Sita	Do. ..	Sitaban, village, 6 miles S.-W. of Kota.
286	Remains of sixteen temples	Garhwal ..	Adbadri, village in pargana Chanpur of tahsil Srinagar.
287	The fort with walls and ruins of dwelling houses inside it, and with flights of steps.	Do. ..	Chandpur Fort in pargana Chandpur.
288	A trident of iron with a shaft, 16′ high with one ancient and three modern inscriptions, situated in the compound of a fine old temple which was repaired by Amar Singh Tapha.	Do. ..	Gopesvar village in pargana Nagpur.
289	A trident of iron with a shaft of the same material, with an ancient inscription	Do. ..	Barahat.
290	Old mounds of considerable extent covered with bricks.	Lucknow ..	Arjunpur and Rukhara villages in tahsil Malhad.
291	Mounds at each of these villages	Do. ..	Paharnagar Tikuria, Siris, and Nagarm, villages in Mohanlalganj pargana.
292	The mound known as Kalhaur or Kilho ..	Hardoi ..	Bawan pargana.
293	Immense brick-mounds locally called Bhankargarh, near the village of Bibi-Khera and Bharaja-Karauli.	Do. ..	Gandwa, village in tahsil Sandila.

मूल अधिसूचना की टंकित प्रति
Typed Copy of Original Notification

UNITED PROVINCES GAZETTE, EXTRAORDINARY, DECEMBER 28, 1920.

PUBLIC WORKS DEPARTMENT.

BUILDINGS AND ROADS BRANCH.

Dated Allahabad, the 27th December, 1920.

No. 1669M/1133M-IN exercise of the powers conferred by section 3, sub-section (3) of the Ancient Monuments Preservation Act (VII of 1904). His Honour the Lieutenant. Governor is hereby pleased to confirm this department notification no. 1465/1133M., dated the 25th November, 1920, published at pages 1911-1924 of the Part I of the *United Provinces Gazette*, dated the 27th November, 1920, relating to the undermentioned Monument.

S.No.	Name and description of Monument.	District.	Locality.
286	Remains of sixteen temples	Garhwal	Adbadri, village in pargana Chanpur of Tahsil Srinagar.

अनुलग्नक-III
ANNEXURE-III

संस्मारक और उसके आस-पास के क्षेत्रों के चित्र
Images of the Monument and its surrounding areas

चित्र 1: संरक्षित संस्मारक का दृश्य
Image 1: View of the Protected Monument

चित्र 2: श्री राम-लक्ष्मण और हनुमान मंदिर का दृश्य
Image 2: View of Shri Ram - Lakshman and Hanuman Temple

चित्र 3: अन्नपूर्णा मंदिर का दृश्य
Image 3: View of Annapurna Temple

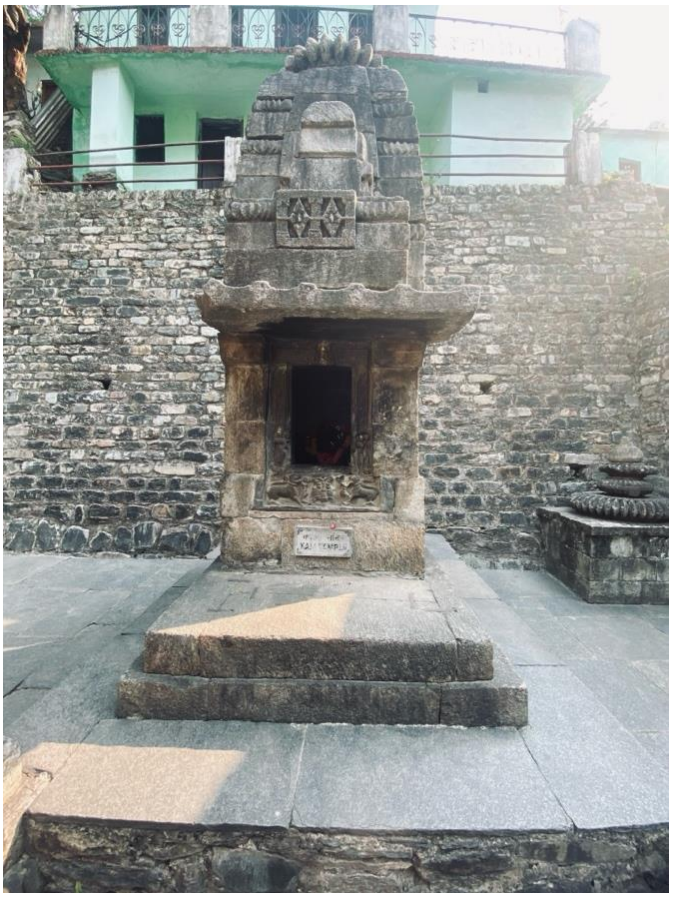

चित्र 4: काली माता मंदिर का दृश्य
Image 4: View of Kaali Mata Temple

चित्र 5: शिव मंदिर का दृश्य
Image 5: View of Shiva Temple

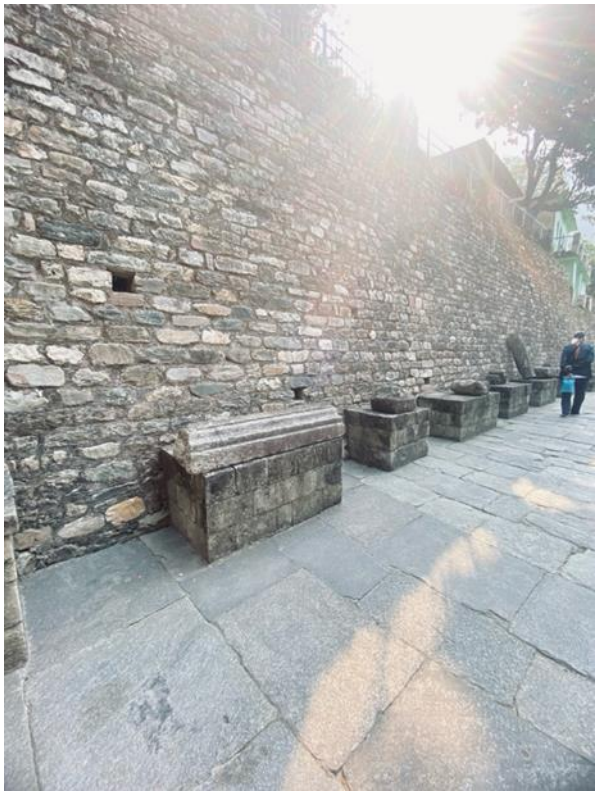

चित्र 6: वास्तुकला के टुकड़ों का दृश्य
Image 6: View of Architectural Fragments

चित्र 7: प्रवेश द्वार पर जानकी मंदिर का दृश्य
Image 7: View of Janaki Temple at the entrance

चित्र 8: संरक्षित संस्मारक से उत्तर की ओर का दृश्य
Image 8: Northern side view from the Protected Monument

चित्र 9: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में खाली भूखंड और परित्यक्त संरचनाएं
Image 9: Vacant plots and abandoned structures in Prohibited Area

चित्र 10: प्रतिषिद्ध क्षेत्र में मुख्य सड़क के किनारे निर्मित संरचना
Image 10: Built structure along the main road in Prohibited Area

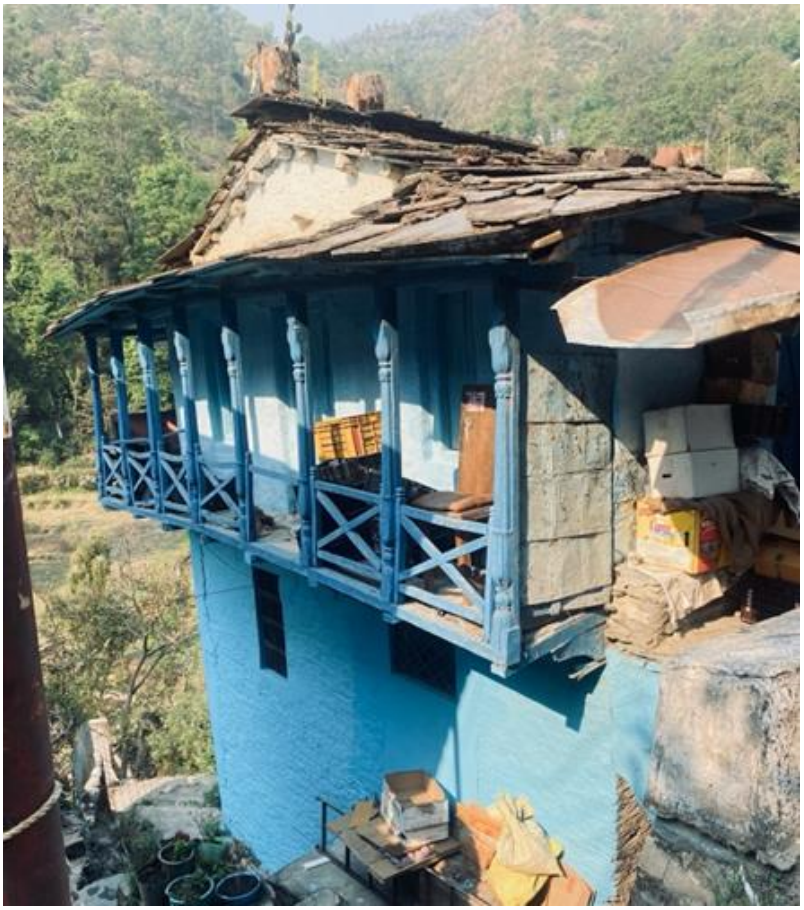

चित्र 11 और 12: स्थानीय वास्तुकला में निर्मित घरों का दृश्य
Image 11 and 12: View of Houses built in Vernacular Architecture

चित्र 13: वनस्पति वाले खुले क्षेत्र
Image 13: Open areas with vegetation

चित्र 14: संरक्षित संस्मारक के पश्चिम की ओर विनियमित क्षेत्र में निर्मित संरचनाएं
Image 14: Built up structures in Regulated Area on the Western side of the Protected Monument